प्रेरितों का विश्वास-कथन

अध्याय 3

यीशु मसीह

Manuscript

thirdmill

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1
ईश्वरत्व 2
  परमेश्वर का पुत्र 2
  प्रभु 5
मनुष्यत्व 6
  A. अनुभव 7
    वंश 7
    शरीर 8
    आत्मा 9
    पुनरुत्थान 10
  कार्यभार 11
    पुराने नियम की पृष्ठभूमि 11
    यीशु में पूर्णता 13
  स्वभाव 14
कार्य 18
  दीन होना 18
    देहधारण 19
    दुःख-भोग 21
  ऊँचा उठाया जाना 24
    पुनरुत्थान 24
    स्वर्गारोहण 26
    सिंहासन पर विराजमान होना 26
    न्याय 27
निष्कर्ष 28

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परिचय

पिछले दो हज़ार सालों से लाखों लोगों ने नासरत के यीशु की आराधना, अनुसरण और उसके सुसमाचार की घोषणा की है। इतिहास में किसी और व्यक्तित्व ने इतनी अधिक प्रशंसा प्राप्त नहीं की है और न ही समाज को किसी ने इतना प्रभावित किया है। कलाकारों, संगीतकारों और लेखकों ने उसे अपनी कला का विषय बनाया है। राष्ट्र और संस्कृतियाँ उसकी शिक्षाओं पर निर्मित हैं। दुनिया के अनेक हिस्सों में पंचांग (कैलेंडर) को भी उसके जन्म से ही गिना जाता है।

इतना प्रसिद्ध होने के बावजूद भी यीशु अनेक आलोचनाओं का विषय है। हर प्रकार के विद्वान उस पर शोध करते हैं। संदेही उस पर संदेह जताते हैं। और उसके अनुयायी हर काल्पनीय रूप से उसका अध्ययन करते हैं।

और सच्चाई यह है कि यीशु के बारे में सीखना प्रत्येक के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि एक दिन हम सब को इस प्रश्न का उत्तर देना होगा "यीशु मसीह कौन है?" मसीहियों के लिए इसका प्रत्युत्तर जाना-पहचाना होना चाहिए, क्योंकि हम प्रेरितों के विश्वास-कथन में सदियों से इसका उच्चारण करते आ रहे हैं।

प्रेरितों के विश्वास-कथन की हमारी श्रृंखला में यह तीसरा अध्याय है और हमने इसका शीर्षक "यीशु मसीह" रखा है। इस अध्याय में हम विश्वास के उन सूत्रों की ओर हमारे ध्यान को लगाएँगे जो यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, त्रिएकता के दूसरे व्यक्तित्व, में विश्वास की पुष्टि करते हैं। ये सूत्र निम्न प्रकार से हैं।

> मैं उसके एकमात्र पुत्र, हमारे प्रभु, यीशु मसीह में विश्वास करता हूँ।
> जो पवित्र आत्मा से कुँवारी मरियम के द्वारा पैदा हुआ।
> उसने पोन्तियस पिलातुस के हाथों दुःख सहा,
> क्रूस पर चढ़ाया गया, मारा गया और गाड़ा गया;
> वह अधोलोक में उतरा।
> तीसरे दिन वह मृतकों में से फिर जी उठा।
> वह स्वर्ग में चढ़ गया।
> और वह सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है।
> जहां से वह जीवितों और मृतकों का न्याय करने के लिए आएगा।

विश्वास-कथन जो यीशु के बारे में कहता है उसको सारांश में बताने के जहां कई तरीके हैं, वहीं हम तीन विषयों की ओर ध्यान देंगे जो धर्मविज्ञान के संपूर्ण इतिहास में केन्द्र बिन्दु रहे हैं। सर्वप्रथम हम यीशु मसीह के ईश्वरत्व के बारे में बात करेंगे, जैसे कि उसकी ईश्वरत्व की प्रकृति और त्रिएकता के अन्य सदस्यों के साथ उसके संबंध को देखते हुए। द्वितीय हम उसके मनुष्यत्व की ओर ध्यान देंगे और उसकी ईश्वरीय और मानवीय प्रकृतियों के बीच संबंध पर चर्चा करेंगे। और तृतीय हम उसके कार्य के बारे में बात करेंगे, पृथ्वी पर उसकी सेवकाई के दौरान ही नहीं परन्तु उसके पश्चात् भी। तो आइए हम इस बात पर चर्चा करने के साथ आरंभ करें कि प्रेरितों के विश्वास-कथन में किस प्रकार यीशु मसीह के ईश्वरत्व को संबोधित किया गया है।

ईश्वरत्व

> जब हम यीशु के ईश्वरत्व की बात करते हैं- यह कि वह पूर्ण रूप से परमेश्वर है- तो हम यीशु कौन है के विषय में नए नियम के केन्द्रीय दावे के बारे में बात कर रहे हैं। हमें यह बताया गया है कि यीशु पूर्ण रूप से परमेश्वर और पूर्ण रूप से मनुष्य दोनों है। जिस क्षण हम इनमें से किसी एक का भी इनकार करते हैं, तो फिर हम यीशु को खो देते हैं। उसके ईश्वरत्व के विषय में यीशु को स्पष्ट करने का एकमात्र तरीका वह है जिस प्रकार बाइबल इसको स्पष्ट करती है। हमें बताया गया है कि वह जीवित परमेश्वर का पुत्र है। प्रारंभिक कलीसिया के द्वारा प्रचार किया गया यह सबसे मूलभूत सत्य है। और उदाहरण के तौर पर पौलुस हमें क्या बताता है- जो वह कुलुस्सियों की पत्री में लिखता है- हमारा आश्वासन यही है कि वह (यीशु) सब बातों के ऊपर सर्वसामर्थी है। उसी में सब कुछ रचा गया है। सब शक्तियाँ उसी के पाँवों तले हैं। यह केवल परमेश्वर के विषय में ही कहा जा सकता है। आप इस बात को हटा दीजिए, तो हमारे पास न सुसमाचार होगा, न यीशु होगा और न ही मसीहियत होगी।
>
> (डॉ. आर. एल्बर्ट मोहलेर)

प्रेरितों का विश्वास-कथन यीशु के ईश्वरत्व का उल्लेख इन शब्दों में करता है:

> मैं उसके एकमात्र पुत्र, हमारे प्रभु, यीशु मसीह में विश्वास करता हूँ।

मसीहियों ने यीशु के ईश्वरत्व को दर्शाने के लिए सदैव "मसीह," "परमेश्वर के पुत्र," और "प्रभु" जैसे शब्दों का प्रयोग किया है।

हमारे उद्देश्यों के लिए हम प्रेरितों के विश्वास-कथन के द्वारा यीशु के ईश्वरत्व को दर्शाने हेतु इस्तेमाल किए गए शब्द-समूहों पर ही ध्यान केन्द्रित करेंगे। एक ओर, हम इस तथ्य को देखेंगे कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। और दूसरी ओर, हम देखेंगे कि यीशु के प्रभु होने का क्या अर्थ है। आइए हम शब्द-समूह "परमेश्वर के पुत्र" के अर्थ के साथ आरंभ करें जो पवित्र-वचन यीशु के साथ जोड़ता है।

परमेश्वर का पुत्र

"परमेश्वर का पुत्र" जैसी भाषा के विषय में हमें पहले यह ध्यान देना चाहिए कि पवित्र-वचन प्राय: इसका इस्तेमाल उन प्राणियों के विषय में बात करने के लिए करता है जो किसी भी रूप में ईश्वरीय नहीं हैं। उदाहरण के तौर पर अय्यूब 1:6 और 2:1 जैसे अनुच्छेदों में स्वर्गदूतों को परमेश्वर के पुत्रों के रूप में उल्लिखित किया गया है। बाइबल के कुछ आधुनिक अनुवादों में इन पदों का अनुवाद परमेश्वर के पुत्रों की अपेक्षा "स्वर्गदूतों" के रूप में किया गया है। परन्तु अय्यूब के अनुच्छेदों में इब्रानी भाषा में "बिनेय हायलोहिम" है जिसका शाब्दिक अर्थ "परमेश्वर के पुत्र" है। अन्य अनुच्छेदों में भी हम इसी प्रकार की भाषा शैली पाते हैं।

निर्गमन 4:22 और होशे 1:1 जैसे पदों में इस्राएल राष्ट्र को परमेश्वर का पुत्र कहा गया है। 2शमूएल 7:14 और भजन संहिता 2:7 जैसे स्थानों में इस्राएल के सांसारिक राजाओं का उल्लेख भी परमेश्वर के पुत्रों के रूप में किया गया है। लूका 3:38 में सबसे पहले मानव आदम को भी परमेश्वर का पुत्र कहा गया है।

जैसे कि सब मसीही जानते हैं, पवित्र-वचन के अनेक अनुच्छेदों में परमेश्वर के विश्वासयोग्य विश्वासियों को उसके पुत्र कहा गया है। मत्ती 5:9 और 45; लूका 20:36 एवं रोमियों 8:14 और 19 जैसे स्थानों में हम यह पाते हैं। जिस प्रकार पौलुस ने गलातियों 3:26 में लिखा है:

> तुम सब उस पर विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की संतान हो। (गलातियों 3:26)

परन्तु यदि शीर्षक "परमेश्वर का पुत्र" का अर्थ यह नहीं होता कि यीशु ईश्वरीय है, तो कलीसिया ने इसे इतना महत्व क्यों दिया?

जब हम यह देखते है कि नया नियम यीशु के बारे में किस प्रकार बात करता है, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि वह अद्वितीय रूप से परमेश्वर का पुत्र है।

> वास्तव में नए नियम में जो एक महत्वपूर्ण बात है वह यह है कि यीशु परमेश्वर का अद्वितीय पुत्र है। और वह उस तत्व में भागीदार है जो परमेश्वर स्वयं है। दूसरे रूप में कहें तो यीशु संपूर्ण परमेश्वर है। और हम रिश्ते और दत्तकता के द्वारा परमेश्वर की संतान हैं परन्तु तत्व के द्वारा नहीं। यीशु परमेश्वर का अनन्त पुत्र है। वह हमेशा से परमेश्वर का पुत्र है।
>
> डॉ. टॉम शरेइनर

यीशु का पुत्रत्व विशेषकर यूहन्ना रचित सुसमाचार में विशेष रूप से स्पष्ट है। उदाहरण के तौर पर, अध्याय 1 के पद 1 से 18 में हमें बताया गया है कि यीशु परमेश्वर का अनन्त वचन है, अर्थात् वह स्वयं परमेश्वर, और पिता का एकमात्र पुत्र है। हम इसी बात को यूहन्ना के अध्याय 8 के 18 से 23 पद में पाते हैं जहां यीशु ने कहा था कि पिता के पुत्र के रूप में वह ऊपर से आया है, और कि उसका उद्गम इस दुनिया का नहीं है। और हम यूहन्ना अध्याय 10 के पद 30 में पाते हैं जहां यीशु ने बल दिया कि वह और पिता एक ही हैं।

परन्तु सबसे स्पष्ट स्थान शायद जहां यूहन्ना ने इसे बिल्कुल स्पष्ट किया वह है यूहन्ना अध्याय 5 का पद 18। सुने उसने वहां क्या कहा।

> (यीशु) परमेश्वर को अपना पिता कहकर, अपने आप को परमेश्वर के तुल्य ठहराता था। (यूहन्ना 5:18)

यह अनुच्छेद स्पष्ट करता है कि जब यीशु ने स्वयं को परमेश्वर के पुत्र के रूप में बताया तो उसका अर्थ था कि वह परमेश्वर के समान था। इसी कारणवश, मसीही लोग उचित रूप से यह समझ गए हैं कि जब बाइबल कहती है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, तो इसका अर्थ है कि वह अद्वितीय और ईश्वरीय दोनों है।

यीशु का ईश्वरीय पुत्रत्व नए नियम के अनेक अन्य अनुच्छेदों में भी उल्लिखित है। हम इसे रोमियों 1:3-4 और 8:3 में पाते हैं जहां पौलुस ने सिखाया था कि यीशु देहधारण से पूर्व ही परमेश्वर का ईश्वरीय पुत्र था। हम इब्रानियों 1:1-3 में हम देखते हैं कि परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु ने ब्रह्मांड की रचना की और वह पिता के अस्तित्व का सटीक प्रतिनिधि है। इन और अन्य स्थानों पर यीशु को एक विशेष रूप में परमेश्वर के पुत्र के रूप में पहचाना गया है जो उसके अनन्त ईश्वरीय स्वभाव को दर्शाता है।

यीशु के परमेश्वर के ईश्वरीय और अनन्त पुत्र होने का बल त्रिएकता की धर्मशिक्षा में दर्शाया गया है, जो कहती है कि

> परमेश्वर के तीन व्यक्तित्व हैं, परन्तु मात्र एक तत्व है।

नया नियम सिखाता है कि यीशु पुत्र-परमेश्वर है, त्रिएकता के तीन व्यक्तित्वों में से एक। परन्तु पिता और पवित्र आत्मा के साथ उसका क्या संबंध है?

जिस प्रकार पूर्व के अध्यायों में हमने चर्चा की है, त्रिएकता पर सत्तामूलक दृष्टिकोण परमेश्वर के व्यक्तित्व और अस्तित्व पर ध्यान देता है। परमेश्वर के पुत्र के रूप में, मसीह सामर्थ और महिमा में पिता और पवित्र आत्मा के समान है। परमेश्वर के तीनों व्यक्तित्व- पुत्र सहित- अनश्वर, अनन्त और अपरिवर्तनीय हैं। और प्रत्येक में समान मूलभूत ईश्वरीय चरित्र, जैसे बुद्धि, सामर्थ, पवित्रता, न्याय, भलाई और सत्य पाए जाते हैं।

इसके विपरीत, त्रिएकता पर विधानीय दृष्टिकोण वर्णन करता है कि परमेश्वर के व्यक्तित्व किस प्रकार परस्पर अन्तर्क्रिया करते हैं। इस दृष्टिकोण से, प्रत्येक के पास अलग-अलग उत्तरदायित्व, अधिकार के भिन्न स्तर और भिन्न भूमिकाएँ होती हैं। उदाहरण के तौर पर, मसीह सदैव पिता का पुत्र रहा है, पिता के अधिकार के अधीन। सुनिए यूहन्ना 6:38 में यीशु ने क्या कहा, जहां उसने पिता के समक्ष अपने समर्पण का वर्णन किया था:

> मैं अपनी इच्छा नहीं, वरन अपने भेजने वाले कि इच्छा पूरी करने के लिए स्वर्ग से उतरा हूँ। **(यूहन्ना 6:38)**

और इसी प्रकार का दावा उसने यूहन्ना 8:28 और 29 में किया, जहां हम ये शब्द पढ़ते हैं:

> यीशु ने कहा, मैं... अपने आप से कुछ नहीं करता, परन्तु जैसे मेरे पिता ने मुझे सिखाया, वैसे ही ये बातें कहता हूँ। और मेरा भेजने वाला मेरे साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा; क्योंकि मैं सर्वदा वहीं काम करता हूँ, जिससे वह प्रसन्न होता है। **(यूहन्ना 8:28-29)**

संपूर्ण नए नियम में पुत्र पिता के अधिकार के अधीन है। उनके बीच कोई मतभेद नहीं है, क्योंकि पिता और पुत्र सदैव सहमत होते हैं। परन्तु उच्च श्रेणी सदैव पिता की है।

इसी प्रकार, त्रिएकता के विधान में पुत्र के पास पवित्र आत्मा के ऊपर अधिकार है। उदाहरण के तौर पर यूहन्ना 15:26 में यीशु के शब्दों को सुनें:

> परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूँगा... वही मेरी गवाही देगा। **(यूहन्ना 15:26)**

दूसरे अनुच्छेदों में, जैसे रोमियों 8:9 और 1पतरस 1:11, पवित्र आत्मा को वास्तव में “मसीह का आत्मा” कहा गया है, पुन: यह दर्शाते हुए कि आत्मा को मसीह द्वारा भेजा गया है।

इन संबंधों को त्रिएकता के दूसरे व्यक्तित्व के रूप में पुत्र की पहचान में दर्शाया गया है। वह सत्तामूलक त्रिएकता का दूसरा व्यक्तित्व है क्योंकि उसका संचालन पहले व्यक्तित्व, पिता, के द्वारा किया जाता है और वह तीसरे व्यक्तित्व, पवित्र आत्मा, को संचालित करता है। वह विधानीय त्रिएकता का द्वितीय व्यक्तित्व है क्योंकि वह मध्य श्रेणी को संभालता है। वह पिता के अधीन है परन्तु पवित्र आत्मा के ऊपर उसका अधिकार है।

प्रारंभिक कलीसिया में यह अंगीकार कि यीशु मसीह पूर्ण रूप से ईश्वरीय है, मसीही विश्वास का एक महत्वपूर्ण पहलू था। जिन्होंने अपने बपतिस्मा के दौरान प्रेरितों के विश्वास-कथन का अंगीकार किया था उनसे त्रिएकता की आंतरिक क्रियाओं के विषय में धर्मविज्ञान के बिंदुओं की पुष्टि करने की मांग नहीं रखी जाती थी। परन्तु उनसे बिना किसी हिचकिचाहट के मसीह के ईश्वरत्व की घोषणा करने की आशा की जाती थी। आज भी यीशु की सच्चे एवं पूर्ण रूप से परमेश्वर के रूप में पुष्टि करना बाइबल पर आधारित मसीहियत की सच्ची पहचान है।

अब जब हमने “परमेश्वर का पुत्र” शब्द-समूह के महत्व को देख लिया है, अब हम यह देखने के लिए तैयार हैं कि किस प्रकार शीर्षक “प्रभु” यीशु के ईश्वरत्व को दर्शाता है।

प्रभु

जब नया नियम यीशु को प्रभु कहता है तो यह यूनानी शब्द कुरियोस को अनूदित कर रहा है। कुरियोस तुलनात्मक रूप से सामान्य शब्द था जिसका अर्थ था शासक या स्वामी, और इसका उपयोग संबोधन के विनम्र रूप में भी किया जाता था, जैसे कि हिन्दी का शब्द “श्रीमान”। इसी प्रकार कुरियोस शब्द का प्रयोग कई बार मनुष्यों के लिए भी किया गया है, जैसे मत्ती 10:24; लूका 12:36-47; इफ़िसियों 6:5-9 और अन्य कई स्थानों पर।

इसके साथ-साथ, नए नियम ने शब्द कुरियोस का प्रयोग परमेश्वर के नाम के रूप में भी किया है, जैसे मत्ती 11:25; लूका 1:16; प्रेरितों के काम 2:39 एवं अन्य कई अनुच्छेदों में। अर्थों की इस श्रृंखला को ध्यान में रखते हुए, हमें यह क्यों मानना चाहिए कि कुरियोस का प्रयोग नए नियम में यह दर्शाता है कि यीशु ईश्वरीय है? हमें यह क्यों नहीं मानना चाहिए कि यह केवल पृथ्वी पर उसके अधिकार और सम्मान को बताता है?

> कुरियोस शब्द के मसीही इस्तेमाल की कुंजी पुराना नियम है। पुराना नियम इब्रानी भाषा में लिखा गया था। फिर भी मसीह के जन्म से कुछ सदियों पूर्व इसका यूनानी भाषा में अनुवाद किया गया था। इस अनुवाद को सेप्टुआजिन्ट कहा जाता है। जब यहूदी विद्वानों ने पुराने नियम का यूनानी में अनुवाद किया तो उन्होंने यूनानी शब्द कुरियोस का प्रयोग 6,700 बार उस पवित्र नाम यहोवा के लिए किया जिसके द्वारा परमेश्वर ने स्वयं को अपने लोगों पर प्रकट किया था। यीशु के लिए कुरियोस शब्द के प्रयोग के नए नियम के पहलू को समझने के लिए पृष्ठभूमि बहुत महत्वपूर्ण है। यद्यपि शब्द कुरियोस अपने आप में यीशु के ईश्वरीय चरित्र को अनिवार्य रूप से नहीं बताता है, परन्तु पुराने नियम की पृष्ठभूमि में इसका प्रयोग अनेक लेखों में यीशु के ईश्वरत्व को स्पष्टता से दर्शाता है।
>
> डॉ. कीथ जाँनसन

> नए नियम का एक अद्वितीय अनुच्छेद वह है जहां यह कहता है कि “हर एक घुटना झुकेगा और हर एक जीभ अंगीकार करेगी कि यीशु ही प्रभु है, पिता परमेश्वर की महिमा के लिए” (फिलिप्पियों 2)। और वास्तव में पौलुस उस समय यशायाह से उद्धृत कर रहा था, जहां पर यह प्रशंसा का एक गीत था कि हर एक अंगीकार करेगा कि यहोवा ही प्रभु है। अब वह जानबूझ कर उस पुराने नियम के अनुच्छेद को लेकर कह रहा है कि वास्तव में यीशु मसीह प्रभु है। और उस क्षण यह काफी स्पष्ट है कि नया नियम कह रहा है कि यीशु मसीह मात्र स्वामी ही नहीं है, उसकी पहचान इस्राएल के प्रभु परमेश्वर के साथ होनी चाहिए।
>
> डॉ. पीटर वाकर

सुनिए पौलुस ने रोमियों 10:9-13 में क्या लिखा है:

> यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा... क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा वह उद्धार पाएगा। (रोमियों 10:9, 13)

इस अनुच्छेद के पद 13 में पौलुस ने इस बात की पुष्टि के लिए योएल 2:32 को उद्धृत किया कि जो कोई यीशु के नाम को पुकारता है वह उद्धार पाएगा। परन्तु इब्रानी पुराने नियम में योएल की पुस्तक के इस पद में प्रभु का नाम यहोवा, परमेश्वर का नाम, था। सरल भाषा में कहें तो जब पौलुस ने कहा कि यीशु प्रभु है तो उसका अर्थ था कि यीशु यहोवा, पुराने नियम का प्रभु और परमेश्वर, है।

नए नियम के अन्य अनुच्छेद जो यीशु की समानता पुराने नियम के परमेश्वर से करते हैं वे हैं, मत्ती अध्याय 3; मरकुस अध्याय 1; लूका अध्याय 3 और यूहन्ना अध्याय 1, जहां यीशु यशायाह 40 से प्रभु है जिसका मार्ग यूहन्ना बपतिस्मादाता ने तैयार किया। इस बात को हम इब्रानियों 1:10 में पाते हैं जहां प्रभु यीशु परमेश्वर है जिसको भजन 102:24 और 25 इस संसार की रचना करने का श्रेय प्रदान करते हैं। यह सूची और भी लम्बी बन सकती है।

अब कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि नए नियम में जब भी लोगों ने यीशु को "प्रभु" कहा तो उन्होंने उसके ईश्वरत्व की पुष्टि की। कभी-कभी वे उसे केवल मानवीय सम्मान देना चाहते थे। परन्तु जब कलीसिया औपचारिक रूप से अंगीकार करती है कि यीशु प्रभु है, जैसे हम प्रेरितों के विश्वास-कथन में करते हैं, तो हम बाइबल की शिक्षा की पुष्टि कर रहे हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर है, और पिता और पवित्र आत्मा के समान ईश्वरीय चरित्रों के साथ परमेश्वर के रूप में त्रिएकता का पूर्ण सदस्य है।

मसीह के ईश्वरत्व के मसीही जीवन के लिए अनेक निहितार्थ हैं। उदाहरण के तौर पर, इसका अर्थ है कि हमारी प्रार्थनाओं और गीतों में हमें यीशु को परमेश्वर के रूप में स्वीकार करना चाहिए और उसकी आराधना करनी चाहिए। इसका अर्थ है कि हमें उससे प्रार्थना करनी चाहिए, जिस प्रकार हम पिता और पवित्र आत्मा से करते हैं। और इसका अर्थ यह भी है कि हम हमारे उद्धार की सुरक्षा में राहत पा सकते हैं, यह जानते हुए कि स्वयं परमेश्वर ने हमें पापों से छुड़ाया है। मसीही जीवन में ये और अन्य कई व्यावहारिक विषय इस विश्वास पर आधारित होते हैं कि यीशु ईश्वरीय है।

यीशु के ईश्वरत्व की इस धारणा को मन में रखते हुए अब हम हमारे ध्यान को उस ओर मोड़ने के लिए तैयार हैं कि प्रेरितों के विश्वास-कथन में यीशु के मनुष्यत्व को किस प्रकार दर्शाया गया है।

मनुष्यत्व

पिछली कुछ सदियों में अनेक धर्मविज्ञानियों ने यह सहजता से स्वीकार कर लिया है यीशु मानव था, परन्तु उन्होंने उसके ईश्वरत्व पर प्रश्न उठाया है। परन्तु कलीसिया की प्रारंभिक सदियों में लोगों के लिए यीशु के मनुष्यत्व पर प्रश्न उठाना इतनी ही सामान्य बात थी। उन दिनों के प्रभावशाली दर्शनशास्त्रों ने लोगों के लिए यह स्वीकार करना सहज बना दिया था कि कोई देवता मानव का भेष ग्रहण कर सकता है। परन्तु उनके लिए इस बात को स्वीकार करना कठिन था कि कोई देवता वास्तव में मनुष्य बन सकता है। मानव भौतिक और भावनात्मक प्राणी हैं। उनके अनुमान में परमेश्वर निम्न, प्राणीरूपी मानवीय प्रकृति लेने के द्वारा अपनी महिमा और वैभव से समझौता नहीं करेगा। दुर्भाग्यवश, अनेक आधुनिक मसीही भी इस बात को मानने में कठिनाई महसूस करते हैं कि पुत्र-परमेश्वर पृथ्वी पर आया और सभी कमज़ोरियों और सीमितताओं के साथ संपूर्ण मनुष्यत्व को स्वीकार किया।

इस बात को दर्शाने के लिए कि यीशु संपूर्ण मनुष्य था, हम उसके मनुष्यत्व के तीन विशाल चरित्रों के बारे में बात करेंगे। पहला, हम उसके मानवीय अनुभवों के विषय में बात करेंगे। दूसरा, हम उसके

मानवीय उत्तरदायित्व के विषय में चर्चा करेंगे। और तीसरा हम उसकी मानवीय स्वभाव और ईश्वरीय स्वभाव के साथ इसके संबंध के विषय में कुछ शब्द कहेंगे। तो आइए प्रेरितों के विश्वास-कथन में सूचीबद्ध उसके मानवीय अनुभवों को देखने के साथ हम प्रारंभ करें।

अनुभव

यीशु के अनेक अनुभव प्रमाणित करते हैं कि वह सच्चे रूप से मनुष्य था क्योंकि मनुष्य ही ऐसे अनुभव प्राप्त कर सकता है। विश्वास-कथन के निम्नलिखित दावों को सुनें:

> (यीशु) पवित्र आत्मा से कुंवारी मरियम के द्वारा पैदा हुआ।
> उसने पोन्तियस पिलातुस के हाथों दुःख सहा,
> क्रूस पर चढ़ाया गया, मारा गया और गाड़ा गया;
> वह अधोलोक में उतरा।
> तीसरे दिन वह मृतकों में से फिर जी उठा।
> वह स्वर्ग में चढ़ गया।

ये अनुभव यीशु के मनुष्यत्व के कम से कम चार पहलूओं की पुष्टि करते हैं: उसका वंश, उसकी देह, उसका प्राण और उसका पुनरुत्थान। हम उसके वंश को देखते हुए शुरु करेंगे जिसमें उसके गर्भधारण और जन्म भी शामिल हैं।

वंश

प्रेरितों का कथन यीशु के वंश के विषय में इन शब्दों को कहता है:

> (वह) पवित्र आत्मा से
> कुंवारी मरियम के द्वारा पैदा हुआ।

निःसंदेह, यीशु के गर्भधारण और जन्म के विषय में कई असामान्य विवरण पाए जाते हैं। पहला, मानवीय पिता की अपेक्षा उसका गर्भधारण पवित्र आत्मा के द्वारा हुआ। और उसका जन्म कुछ इस प्रकार से हुआ कि उसने अपनी माता के कुँवारपन को भी प्रभावित नहीं किया। हम इन विवरणों के विषय में और अधिक चर्चा इस अध्याय में आगे करेंगे। इस समय हम आधारभूत मानवीय अनुभवों के रूप में गर्भधारण और जन्म के मूलभूत विचारों पर ध्यान देंगे।

जब प्रेरितों का विश्वास-कथन कहता है कि यीशु का "जन्म हुआ," तो वह यही कहता है कि यीशु ने उसी प्रकार आरंभ किया जिस प्रकार आदम और हव्वा के बाद के सभी मनुष्यों ने किया: अपनी माता के गर्भ में एक छोटे शिशु के रूप में। मत्ती 1:18; लूका 2:5 और 6; गलातियों 4:4; इब्रानियों 10:5 जैसे अनुच्छेद दर्शाते हैं कि परमेश्वर ने यीशु को मरियम के गर्भ में उसी प्रकार रचा जिस प्रकार उसने प्रत्येक शिशु को रचा है।

लूका 1:34 से 37 मरियम की गर्भावस्था के विषय में मरियम और स्वर्गदूत के बीच इस वार्तालाप का वर्णन करता है:

> मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, यह कैसे होगा? मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं। स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया; "कि पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी... जो वचन परमेश्वर की ओर से होता है वह प्रभावरहित नहीं होता"। (लूका 1:34-37)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

स्वयं मरियम ने इस बात को पहचान लिया था कि इस प्रकार से एक बच्चे का गर्भधारण करना एक चमत्कार ही होगा। और उसने एक चमत्कार का अनुभव ही किया।

> यीशु का चमत्कारिक जन्म इस बात की पुष्टि करता है कि वह पूर्ण रूप से ईश्वरीय और पूर्ण रूप से मनुष्य भी है, परन्तु यह उसे पूर्ण रूप से मनुष्य होने से कम नहीं बनाता। यह सत्य है कि गर्भधारण करना एक चमत्कार है, शायद छुटकारे के इतिहास का एक महानतम चमत्कार। और फिर भी, यीशु के गर्भधारण के बाद से उसकी सगर्भता और गर्भ में उसका विकास किसी अन्य मनुष्य के समान ही है। जन्म द्वार से उसका निकलना; सामान्य मानवीय जन्म प्रक्रिया; अपने पोषण और भोजन के लिए अपनी माँ पर निर्भर होना; और बहती नाक से लेकर अपने लंगोट बदलवाना सामान्य मानवीय अनुभव है। वह सिर्फ मनुष्य होने से बढ़कर है, परन्तु पूर्ण रूप से मनुष्य होने से कम नहीं है।
>
> डॉ. राॅबर्ट जी. लिस्टर

कभी-कभी ऐसा तर्क दिया जाता है कि यीशु पूर्ण रूप से मनुष्य नहीं हो सकता क्योंकि उसका कोई मानवीय पिता नहीं था। परन्तु सबसे पहले मनुष्यों का न तो पिता था और न ही माता थी। जिस प्रकार उत्पत्ति अध्याय 2 हमें बताता है, आदम को भूमि की मिट्टी के द्वारा रचा गया था और हव्वा को आदम की हड्डी के द्वारा रचा गया था। उनमें से किसी के भी माता-पिता नहीं थे। परन्तु वे दोनों पूर्ण रूप से मनुष्य थे। इसी प्रकार, यीशु भी पूर्ण रूप से मनुष्य था यद्यपि उसका जन्म सामान्य से कहीं बढ़कर था।

और पवित्र-वचन से जो भी हम जानते हैं, मरियम के गर्भ में यीशु का विकास भी एक सिद्ध प्राकृतिक घटना थी जिसका अंत उसके जन्म में हुआ। वह जादू से प्रकट नहीं हुआ, और न ही अपने जन्म के समय स्वर्ग से सीधे उतरा। इसके विपरीत, मत्ती अध्याय 1 और लूका अध्याय 2 दर्शाते हैं कि मरियम की गर्भावस्था पहले तो छिपी रही परन्तु फिर स्पष्ट हो गई। यह उसके मँगेतर यूसुफ़ द्वारा उसकी सच्चाई पर प्रश्न उठाने का कारण भी बनी, जब तक कि परमेश्वर ने उसे स्वप्न में सच्चाई न बता दी। और अंतिम परिणाम यह हुआ कि यीशु का जन्म एक वास्तविक मानवीय शिशु के रूप में हुआ।

> यीशु पूर्ण रूप से मानव है। मसीह का चमत्कारी जन्म उसके मनुष्य होने को किसी भी प्रकार से कम नहीं करता है। वास्तव में यीशु चमत्कारी जन्म में एक सच्चे मनुष्यत्व को दर्शाता है क्योंकि हम मसीह में देखते हैं कि पापी हुए बिना भी हम पूर्ण रूप से मनुष्य हो सकते हैं, जिस प्रकार हम स्वर्ग में होंगे।
>
> (डॉ. ऐरिक के. थोनेस)

यीशु के वंश पर चर्चा करने के पश्चात्, हम इस बात पर चर्चा करने के लिए तैयार हैं कि किस प्रकार उसका शरीर उसके संपूर्ण मनुष्य होने की पुष्टि करता है।

शरीर

यहां हम प्रेरितों के विश्वास-कथन में पाया जाने वाला दावा देखते हैं कि

> (यीशु ने) पोन्तियस पिलातुस के हाथों दुःख सहा,
> क्रूस पर चढ़ाया गया, मारा गया और गाड़ा गया।

इन शब्दों में विश्वास-कथन यीशु के कुछ अनुभवों को बताता है जो तभी संभव हो सकते हैं जब वह पूर्ण रूप से भौतिक मानव हो।

मत्ती अध्याय 27; मरकुस अध्याय 15, लूका अध्याय 23 और यूहन्ना अध्याय 18 और 19 में यीशु के पकड़वाए जाने और क्रूसीकरण के विवरणों के अनुसार यीशु ने कई तरह से पोन्तियस पिलातुस के हाथों दुःख सहा। उसे कोड़े मारे गए, काँटों का मुकुट पहनने को बाध्य किया गया, उस पर थूका गया, उसका उपहास किया गया, लकड़ी के द्वारा बार-बार सिर पर मारा गया और क्रूस पर चढ़ाने के स्थान की ओर लेकर जाते हुए कुछ दूरी तक क्रूस उठाकर चलने के लिए मजबूर किया गया।

यीशु के दुःख, क्रूसीकरण, मृत्यु और गाड़े जाने ने दर्शाया कि वह भौतिक मानवीय शरीर के साथ वास्तविक मनुष्य है- जिसे पीटा जा सकता है, जिसका लहू बह सकता है, वह जिसे सैनिकों के द्वारा सताया जा सकता है, वह जो थकान के कारण गिर सकता है, वह जो मारा भी जा सकता है, और वह जिसके प्राण निकलने के बाद उसे कब्र में गाड़ा भी जा सकता है।

और एक वास्तविक मानवीय देह रखना इसलिए भी महत्वपूर्ण था क्योंकि परमेश्वर के न्याय की मांग थी कि मानवजाति के पापों को हरने के लिए एक विशुद्ध मानव भौतिक ईश्वरीय दण्ड सहे। हम इस बात को रोमियों 7:4; कुलुस्सियों 1:21 और 22 एवं इब्रानियों 10:10 जैसे स्थानों में पाते हैं।

एक उदाहरण के तौर पर, इब्रानियों 2:14 से 17 में पाए जाने वाले इन शब्दों को सुनें:

> इसलिए जब कि लड़के मांस और लहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया ताकि मृत्यु के द्वारा... लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित करे। (इब्रानियों 2:14-17)

जिस प्रकार यह अनुच्छेद स्पष्ट करता है, यीशु को मांस और लहू का होना, एक भौतिक मनुष्य होना आवश्यक था, ताकि वह हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए बलिदान बन सके।

यीशु के वंश और शरीर के इस पहलू को ध्यान में रखते हुए, आइए इस तथ्य की ओर ध्यान दें कि यीशु की आत्मा ने उसके मानवीय स्वभाव को पूर्ण कर दिया था।

आत्मा

पवित्र-वचन नियमित रूप से कहता है मनुष्य नश्वर शरीर के बने हैं जिसमें अनश्वर आत्मा वास करती है। यह कई शब्दों के द्वारा हमारी आत्माओं को संबोधित करता है, परन्तु सबसे प्रचलित शब्द “प्राण” और “आत्मा” है। इब्रानियों 4:12 और 1थिस्सलुनिकियों 5:23 पर आधारित कुछ परंपराएँ मानती हैं कि “प्राण” और “आत्मा” हमारे अस्तित्व के दो भिन्न भाग हैं। परन्तु ऐसे 200 पद हैं जिनमें इनमें से ही किसी शब्द का प्रयोग हमारे संपूर्ण अस्तित्व के सभी आंतरिक, गैर-भौतिक पहलूओं के लिए किया जाता है। इसलिए, यह निष्कर्ष निकालना सर्वोत्तम है कि शब्द “प्राण” और “आत्मा” उसी समान वास्तविकता के बारे में बात करते हैं कि मनुष्य केवल दो भागों में निर्मित है: देह और आत्मा।

लूका 23:46 में, यीशु ने अपने “प्राण” या “आत्मा” के बारे में बात की जब वह मर रहा था। वहां उसके शब्दों को सुनें:

> हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ। (लूका 23:46)

जब यीशु क्रूस पर मरा तो उसने दर्शाया कि जहां उसका शरीर कब्र में रखा जाएगा, वहीं उसकी मानवीय आत्मा या प्राण पिता परमेश्वर के हाथ में होगी।

हमारे अस्तित्व के आत्मिक पहलू के रूप में हमारी आत्मा हमारे विवेक का स्थान है। जब हमारे शरीर मरते हैं, तो हमारी आत्माएँ हमारे शरीरों से अलग हो जाती हैं और चेतन अवस्था में निरंतर जारी रहती हैं। और प्रेरितों का विश्वास-कथन स्पष्ट करता है कि यहीं बात यीशु के साथ हुई जब वह मरा। विशेषत:, यह कहता है:

> वह अधोलोक में उतरा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यहां विश्वास-कथन कहता है कि जब यीशु मरा, उसकी चेतन, विवेकीय आत्मा उसके शरीर से अलग कर दी गई। और जब उसका शरीर कब्र में रहा, उसकी आत्मा अधोलोक में उतरी। इस अध्याय में बाद में हम इस पंक्ति के अर्थ की जांच और भी गहराई से करेंगे। परन्तु अभी, हम केवल यह दर्शाना चाहते हैं कि यीशु के अधोलोक में उतरने के उल्लेख मात्र से प्रेरितों का विश्वास-कथन पुष्टि करता है कि यीशु में वास्तविक मानवीय आत्मा थी।

अंत में, उसके वंश, उसके शरीर और उसकी आत्मा के उल्लेखों के माध्यम से यीशु के मनुष्यत्व की पुष्टि करने के अतिरिक्त, प्रेरितों का विश्वास-कथन यीशु के पुनरुत्थान के बारे में बात भी करता है, जिसमें उसकी आत्मा उसके शरीर से फिर जुड़ गई।

पुनरुत्थान

पुनरुत्थान प्रमाणित करता है कि यीशु एक वास्तविक मानव था क्योंकि यह इसकी पुन: पुष्टि करता है कि उसके पूर्ण, महिमान्वित मानवीय अस्तित्व में उसके वास्तविक मानवीय शरीर के साथ उसकी वास्तविक मानवीय आत्मा का पुन: संयोजन भी शामिल था। उसकी देह का पुनरुत्थान तब हुआ जब उसकी मानवीय आत्मा उसके सिद्ध मानवीय शरीर में डाली गई हाँ, उसका पुनरुत्थानित शरीर कुछ रूपों में भिन्न था क्योंकि इसे महिमान्वित किया गया था और अब यह नश्वर नहीं था। परन्तु इस बात ने उसे कोई कम भौतिक या कम मानवीय नहीं बनाया। इसके विपरीत, जैसे कि हम 1कुरिन्थियों अध्याय 15 में देखते हैं, यीशु का पुनरुत्थानित शरीर सभी विश्वासियों के शारीरिक पुनरुत्थानों में पहिलौठा है। यह हमें दर्शाता है कि हमारे अपने शरीर भविष्य में किस प्रकार के होंगे।

सुनें पौलुस ने 1कुरिन्थियों 15:20-23 में क्या लिखा है:

> परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं उनमें वह पहला फल हुआ। क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई, तो मनुष्य के द्वारा मरे हुओं का पुनरुत्थान भी आया... परन्तु हर एक अपनी बारी से: पहला फल मसीह, फिर मसीह के आने पर उसके लोग। (1कुरिन्थियों 15:20-23)

जिस प्रकार आदम पहला रचित मनुष्य था, वैसे ही यीशु महिमान्वित शरीर के साथ पुनरुत्थानित होने वाला पहला मनुष्य था। उससे पहले कुछ लोगों को पुन: जीवित किया गया था, उनमें से कुछ तो स्वयं यीशु के द्वारा ही जीवित किए गए थे। और हनोक और एल्लियाह को मृत्यु के बिना ही शरीर के साथ स्वर्ग में उठा लिया गया था। परन्तु इनमें से किसी को महिमान्वित, अनश्वर शरीर प्राप्त नहीं हुए थे।

परन्तु यद्यपि यीशु का शरीर अब महिमान्वित है, परन्तु फिर भी यह पूर्ण रूप से मनुष्य - उसी प्रकार हम भी पूर्ण रूप से मनुष्य ही होंगे जब परमेश्वर हमारे शरीरों को मृतकों के महान् पुनरुत्थान के समय नया कर देंगे।

> वह एक छोटा शिशु था। वह अपनी शिशुवस्था में पूर्ण रूप से अपनी माता पर निर्भर था। वह बड़ा हुआ- लूका बताता है कि वह बुद्धि, डीलडौल और परमेश्वर एवं मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया। हमें यह बताया गया है कि उसने भी वही भूख का अनुभव किया जो हमने किया था, उसी प्यास का जो हमने अनुभव की थी, और कलवरी के क्रूस पर उसने वैसी ही मृत्यु का अनुभव किया जैसी मृत्यु मनुष्य अनुभव करता है। अब, यह कुछ अधिक था। वह केवल पूर्ण रूप से मनुष्य ही नहीं था, वह पूर्ण रूप से ईश्वरीय भी था, परन्तु वास्तविकता यह है कि यीशु न केवल आधिकारिक मानव है; बल्कि सिद्ध मानव भी है।

डॉ. आर. रॉबर्ट मोहलर, जूनियर

अब जब हमने उसके अनुभवों के आधार पर यीशु के मनुष्यत्व पर चर्चा कर ली है, तो आइए अब प्रेरितों के विश्वास-कथन में उल्लिखित उसके मानवीय कार्य पर ध्यान दें।

कार्यभार

यीशु के कार्यभार को इन शब्दों के द्वारा प्रेरितों के विश्वास-कथन में दर्शाया गया है:

> मैं यीशु मसीह में विश्वास करता हूँ।

आधुनिक मसीहियत में अनेक विश्वासी इस बात से अनभिज्ञ हैं कि शब्द "मसीह" वास्तव में यीशु के कार्यभार का शीर्षक है न कि उसके व्यक्तिगत नाम का हिस्सा। इस विषय में, शब्द "मसीह," "राजा" या "न्यायी" जैसे शब्दों के काफी हद तक समान है।

हम यीशु के मानवीय कार्यभार की चर्चा दो भागों में करेंगे। पहला, हम "मसीह" नामक कार्यभार की पुराने नियम की पृष्ठभूमि का सर्वेक्षण करेंगे। और दूसरा, हम स्पष्ट करेंगे कि किस प्रकार यीशु में इस कार्यभार की पूर्णता हमारे प्रभु के मनुष्यत्व को दर्शाती है। तो आईये हम "मसीह" नामक कार्यभार की पुराने नियम की पृष्ठभूमि से आरंभ करें।

पुराने नियम की पृष्ठभूमि

हिन्दी शब्द "मसीह" यूनानी शब्द "ख्रिस्तोस" का अनुवाद है, जो स्वयं पुराने नियम के इब्रानी शब्द मशीयाह या "मसीहा" का अनुवाद है जिसका अर्थ होता है "अभिषिक्त जन"।

पुराने नियम के दिनों में, शब्द "अभिषिक्त जन" एक विशाल शब्द था जो किसी भी ऐसे व्यक्ति के लिए लगाया जा सकता था जिसे परमेश्वर ने विशेष रूप से उसकी सेवा करने के लिए नियुक्त किया हो। उदाहरण के तौर पर, 1इतिहास 16:22 नबियों को अभिषिक्त-जनों के रूप में पहचानता है। लैव्यवस्था 4:3,5 और 16 अभिषिक्त याजकों के विषय में बात करता है। और 1शमूएल 26:9,11 और 16 में दाऊद शाउल को परमेश्वर का अभिषिक्त कहता है क्योंकि वह इस्राएल का राजा था।

सुनिए किस प्रकार लैव्यवस्था 21:10 से 12 महायाजक के अभिषिक्तिकरण का वर्णन करता है:

> जो अपने भाइयों में महायाजक हो, जिसके सिर पर अभिषेक का तेल डाला गया हो, और जिसका पवित्र वस्त्रों को पहनने के लिए संस्कार हुआ हो... वह अपने परमेश्वर के अभिषेक का तेलरूपी मुकुट धारण किए हुए है। (लैव्यवस्था 21:10-12)

जिस प्रकार हम यहां देखते हैं, अभिषेक करने की धर्मक्रिया लोगों को परमेश्वर की सेवा के लिए समर्पित करती थी।

शब्द "अभिषिक्त जन" का एक सबसे महत्वपूर्ण प्रयोग पुराने नियम में दाऊद के वंशजों के लिए किया जाता था जिन्होंने यहूदा और इस्राएल पर राजाओं की भूमिका निभाई थी। हम इसे भजन 89:38-51; 132:10-17 और 2इतिहास 6:42 में देखते हैं। दाऊद के जीवन के दौरान परमेश्वर ने दाऊद के साथ वाचा बाँधी जिसमें उसने दाऊद के किसी एक वंश की पृथ्वी पर अटल राज्य की स्थापना करने की प्रतिज्ञा की। भजन 89:3-4 इस प्रकार से दाऊद के साथ परमेश्वर की वाचा का सार प्रस्तुत करता है:

> मैंने अपने चुने हुए से वाचा बाँधी है, मैंने अपने दास दाऊद से शपथ खाई है, "मैं तेरे वंश को सदा स्थिर रखूँगा और तेरी राजगद्दी को पीढ़ी से पीढ़ी तक बनाए रखूँगा।" (भजन 89:3-4)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अब यहां चकित होना स्वाभाविक है कि अंत में दाऊद के पुत्रों ने सक़ंहासन पर से अपना अधिकार क्यों खो दिया, यदि परमेश्वर ने उसकी प्रतिज्ञा उनसे की थी। इसका उत्तर यह है कि इस वाचा में परमेश्वर द्वारा प्रतिज्ञा की गई आशीषें दाऊद के प्रत्येक वंशज द्वारा आज्ञाकारी होने की शर्त पर आधारित थीं। यह शर्त स्पष्ट रूप से 2इतिहास 6:16; भजन 89:30-32 और 132:12 में उल्लिखित है। इसलिए जब दाऊद के वंशजों ने परमेश्वर के विरुद्ध बलवा किया तो उन्होंने अपने सक़ंहासनों को खो दिया।

उदाहरण के तौर पर, 922 ई. पू. में दाऊद के पोते रहोबोआम के दिनों में दाऊद के राज्य से दस गोत्रों को अलग करके जेरोबोआम को दे दिया गया था। हम इस घटना के बारे में 1राजा अध्याय 11 और 12 में पढ़ते हैं। जो गोत्र जेरोबोआम के पास आए उन्हें इस्राएल का राज्य कहा गया और शेष जो रहोबोआम के पास रहे उन्हें यहूदा का राज्य कहा गया।

कालांतर में 587 ई. पू. में यहूदा का राज्य भी दाऊद के घराने से अलग कर दिया गया जब उसका वंशज येकोनिय्याह सक़ंहासन से हटा दिया गया और उसका राज्य बेबीलोन के अधीन हो गया।

लगभग इसी समय के दौरान अनेक नबियों ने भविष्यवाणी की कि परमेश्वर भविष्य में एक महान "मसीहा" या "अभिषिक्त जन" भेजेगा। वह एक महान राजा होगा, दाऊद का वंश होगा जो इस्राएल और यहूदा के राज्यों को फिर से स्थिर करेगा और उन्हें एक साथ जोड़ेगा।

> पुराने नियम में, वह जो मसीहा के रूप में जाना गया वह राजा था- दाऊद के वंश का राजा था। दाऊद से परमेश्वर ने एक वाचा बाँधी थी, और उस वाचा में उससे प्रतिज्ञा की गई थी कि एक दिन परमेश्वर एक राजा को खड़ा करेगा जिसके पास विशेष अद्वितीय "परमेश्वर का पुत्र" होने का संबंध होगा- परमेश्वर के साथ उसका पुत्र होने का संबंध, जो सदा-सर्वदा दाऊद के सक़ंहासन पर राज्य करेगा, जो न्याय और धार्मिकता को स्थापित करेगा। इसलिए वास्तव में, जब हम पुराने नियम के मसीहा का उल्लेख करते हैं, तो हम एक राजा का उल्लेख कर रहे हैं- एक सामर्थी राजा, ऐसा राजा जो परमेश्वर का उद्धार और छुटकारा लेकर आएगा।
>
> डॉ. मार्क स्ट्रॉस

पुराने नियम के अनेक नबियों ने दाऊद के वंशज के रूप में मसीहा के बारे में बात की जो बँधुआई में गए लोगों को प्रतिज्ञा की भूमि पर लौटा ले आएगा और पुन: स्थापित किए हुए राष्ट्र में परमेश्वर की महानतम आशीषों को लाएगा। उदाहरण के तौर पर, हम इस प्रकार की भविष्यवाणियाँ यिर्मयाह 23:5-8; 30:8-9 और 33:14-17 में पाते हैं। हम उन्हें यहेजकेल 34:20-31 और 37:21-28 में भी पाते हैं। इन्हें हम जकर्याह अध्याय 12 और 13 में भी पा सकते हैं। मात्र एक उदाहरण के रूप में, यिर्मयाह 23:5-6 को सुनें:

> यहोवा की यह भी वाणी है: "देख ऐसे दिन आते हैं जब मैं दाऊद के कुल में एक धर्मी अंकुर उगाऊँगा, और वह राजा बनकर बुद्धि से राज्य करेगा, और अपने देश में न्याय और धर्म से प्रभुता करेगा। उसके दिनों में यहूदी लोग बचे रहेंगे और इस्राएली लोग निडर बसे रहेंगे।" (यिर्मयाह 23:5-6)

इस प्रकार की भविष्यवाणियों के माध्यम से पुराने नियम ने परमेश्वर के लोगों को मसीहा- दाऊद के वंश का एक अभिषिक्त राजा जो उन्हें उनके कष्टों से छुड़ाएगा और उन्हें परमेश्वर की महिमान्वित आशीषों में लाएगा- की अभिलाषा रखने को उत्साहित किया।

मसीहा के कार्यभार की पुराने नियम की पृष्ठभूमि के इस पहलू को ध्यान में रखते हुए, हम अब यह देखने के लिए तैयार हैं कि इस कार्यभार की यीशु में पूर्णता किस प्रकार उसके मनुष्यत्व को दर्शाती है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यीशु में पूर्णता

नया नियम 500 से भी अधिक स्थानों में यीशु को मसीह के रूप में दर्शाता है। अत: यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि मसीही दृष्टिकोण से वह महान् मसीहा है जिसकी भविष्यवाणी पुराने नियम ने की थी। परन्तु सारे संदेहों को दूर करने के लिए, यूहन्ना के सुसमाचार में दो अनुच्छेद हैं जहां यीशु को "मसीहा" कहा जाता है और जहां यूहन्ना स्पष्ट करता है कि "मसीहा" का अर्थ वही है जो नए नियम में "मसीह" का है। ये अनुच्छेद हैं- यूहन्ना 1:41 और 4:25-26। इस बात को प्रमाणित करने के लिए, आइए इनमें से एक को हम देखें।

यूहन्ना 4:25-26 में कुएँ पर खड़ी स्त्री के साथ यीशु की वार्तालाप के शब्दों को सुनें:

> स्त्री ने उससे कहा, "मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख्रिस्त कहलाता है, आनेवाला है; जब वह आएगा तो हमें सब बातें बता देगा।" यीशु ने उससे कहा, "मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ।" (यूहन्ना 4:25-26)

यहां यीशु ने पुराने नियम द्वारा भविष्यवाणी किए गए मसीहा होने को स्पष्ट रूप से स्वीकार कर लिया। और यूहन्ना ने स्पष्ट किया कि "मसीहा" के लिए यूनानी में सामान्य शब्द ख्रिस्तोस है, जिसका यहां अनुवाद "मसीह" के रूप में हुआ है। यह बताता है कि जहां कहीं भी हम यीशु को "मसीह" के रूप में बताया हुआ पाते हैं, तो हमें उसे पुराने नियम द्वारा भविष्यवाणी किए गए मसीहा के रूप में समझना चाहिए।

परन्तु किस प्रकार मसीहा के रूप में यीशु की भूमिका प्रमाणित करती है कि वह सचमुच मनुष्य है? परमेश्वर अपनी ईश्वरीय महिमा के साथ लोगों के उद्धार के लिए पृथ्वी पर क्यों न आ सका? अथवा अपने पसंदीदा राष्ट्र की अगुवाई करने के लिए वह अपने एक स्वर्गदूत को क्यों न भेज सका?

पुराने नियम की भविष्यवाणियों के अनुसार, मसीहा को मानवीय होना था क्योंकि उसे दाऊद का पुत्र होना आवश्यक था। जैसे कि हम देख चुके हैं, परमेश्वर ने इस बात की प्रतिज्ञा के साथ दाऊद से वाचा बाँधी थी कि उसका एक वंशज इस्राएल पर सदा-सर्वदा के लिए राज्य करेगा। और निःसंदेह, दाऊद के सारे वंशज मानव ही थे।

> परमेश्वर वाचा के माध्यम से पापियों के साथ रिश्ता बनाता है। वह अपनी इच्छा से ऐसा करता है। उस पर ऐसा करने का कोई दबाव नहीं है। पहल वही करता है। यह परमेश्वर की अपनी इच्छा है कि वह हमारे साथ अपने पुत्र के माध्यम से वाचा बाँधता है। एक बार जब परमेश्वर वाचा बांध लेता है, तो वह निःसंदेह उस वाचा की बातों को पूरा करने हेतु उत्तरदायी होता है, चाहे वे बातें आशीष देने की हों या श्राप। उसके पास वाचा को तोड़ने की आजादी नहीं होती।
>
> डॉ. डेरेक डब्ल्यू. एच. थोमस

> यह कितना भी चकित कर देने वाला क्यों न लगे, परमेश्वर ने अपनी आज्ञा के अनुसार स्वयं को बाध्य किया। जब कभी भी वह वाचा बाँधता है, तो वह उन बातों को पूरा करने को बाध्य होता है। अपनी वाचा के लोगों के लिए अपनी अनन्त इच्छा को पूरी करने हेतु एक माध्यम के रूप में इस प्रकार से वह स्वयं को बाध्य करने का चुनाव करता है। परन्तु यद्यपि वाचा उसे बाँधती है, यह फिर भी उसकी मुक्त इच्छा की एक अभिव्यक्ति है।
>
> डॉ. पॉल चांग, अनुवाद

दाऊद के साथ वाचा के विषय में, परमेश्वर ने अपने लोगों को उद्धार प्रदान करने हेतु एक मानवीय मसीहा को भेजने के लिए स्वयं को बाध्य किया। और वह मसीहा यीशु था।

दूसरा कारण यह है कि केवल दाऊद का एक मानवीय पुत्र ही अपने लोगों के लिए प्रायश्चित का बलिदान बन सकता था। जैसे कि हम देख चुके हैं, इब्रानियों 2:14-17 दर्शाता है कि मसीहा को मनुष्य होना ज़रूरी था। और इससे भी बढ़कर, यशायाह अध्याय 53 इस मांग को जोड़ता है कि प्रायश्चित का बलिदान दाऊद के मानवीय पुत्र के द्वारा ही किया जाए। तीसरा कारण कि मसीहा को मनुष्य होना ज़रूरी था कि उसे दूसरा आदम बनना था। अर्थात् उसे वहां सफल होना था जहां आदम असफल हुआ था।

जब परमेश्वर ने मनुष्य-जाति की रचना की तो उसने आदम को संपूर्ण प्रजातियों पर प्रधान ठहराया, और उसने मनुष्य-जाति को सारे संसार को परमेश्वर के राज्य में परिवर्तित करने के लिए नियुक्त किया। परन्तु आदम ने पाप किया और मनुष्य-जाति को पाप में धकेल दिया और हमें हमारा नियुक्त कार्य करने के अयोग्य बना दिया। उत्पत्ति अध्याय 1 से 3 इस कहानी को बताते हैं, और रोमियों अध्याय 5:12 से 19 इसके गहन महत्व को स्पष्ट करते हैं। पुराने नियम की ऐतिहासिक पुस्तकें बताती हैं कि किस प्रकार पतन हुई मनुष्य-जाति सदियों से परमेश्वर के राज्य के निर्माण के लिए निरंतर प्रयास करती और असफल होती रही है।

अभी भी पिता की माँगें बदली नहीं थीं- मनुष्य-जाति अभी भी परमेश्वर के राज्य का निर्माण करने के लिए उत्तरदायी थी। इसलिए अंत में पिता ने इस समस्या के समाधान के लिए अपने पुत्र को भेजा। पुत्र हमारे लिए राज्य का निर्माण करने हेतु आया। परन्तु हमारे लिए निर्माण करने में- हमारा स्थान लेने में- उसे स्वयं को मनुष्य बनना पड़ा। उसके धार्मिक जीवन, प्रायश्चित की मृत्यु, शक्तिशाली पुनरुत्थान और स्वर्ग में सिंहासन को प्राप्त करने के माध्यम से यीशु वहां सफल हुआ जहां आदम और हम सब असफल हो गए थे। वह मनुष्य-जाति का दूसरा आदम बन गया। और जब हम विश्वास के द्वारा यीशु से जुड़ जाते हैं, तो उसकी सफलता हमारी सफलता बन जाती है, और उसकी सामर्थ हमारा बल बन जाती है। हम परमेश्वर के राज्य का निर्माण करने की वैभवशाली, महत्वपूर्ण भूमिका में पुन: स्थापित किए जाते हैं।

यीशु के मनुष्यत्व के अब तक के हमारे विचार-विमर्श में हमने उसके भिन्न मानवीय अनुभवों और मसीहा के मानवीय कार्यभार के बारे में बात की है। अब हम यीशु के मानवीय स्वभाव और ईश्वरीय स्वभाव के साथ इसके संबंध के विषय में बात करने के लिए तैयार हैं।

स्वभाव

जब हम कहते हैं कि यीशु में मानवीय स्वभाव है तो हमारा अर्थ है कि उसमें मनुष्य होने के लिए आवश्यक सभी चरित्र और विशेषताएं पाई जाती हैं- जैसे भौतिक मानवीय शरीर और एक विवेकपूर्ण मानवीय आत्मा।

संपूर्ण कलीसिया इतिहास में मसीह के मानवीय स्वभाव के विषय पर अनेक धर्मविज्ञानीय युद्ध लड़े जा चुके हैं। क्या वह सभी पहलूओं में पूर्ण रूप से मनुष्य था? क्या उसमें वास्तविक मांस और लहू का शरीर था, या केवल वह मनुष्य के रूप में प्रतीत होता था? क्या उसमें वास्तविक मानवीय आत्मा थी, या उसके ईश्वरीय व्यक्तित्व ने एक खाली शरीर में प्रवेश किया था? इस प्रकार के प्रश्न तकनीकी और रहस्यमयी प्रतीत होते हैं, और शायद महत्वरहित भी। परन्तु कभी-कभी मसीह के मानवीय स्वभाव पर उठे तर्क-वितर्कों ने कलीसिया को विभाजित तक करने का खतरा पैदा किया है। वे अनेक धर्मविज्ञानीय परिषदों के विषय और अनेक झूठी शिक्षा देने वाले समूहों के लिए ठोकर का पत्थर रहे हैं। आज भी मसीह की मानवीयता की झूठी धारणाएँ सुसमाचार की जड़ें काट सकती हैं। अत: प्रत्येक मसीही को यीशु के मानवीय स्वभाव के कम से कम आधारभूत पहलूओं को समझना महत्वपूर्ण है।

विश्वासयोग्य मसीही धर्मविज्ञान ने निरंतर इस बात को बनाए रखा है कि यीशु हर तरह से पूर्ण मनुष्य है: उसमें शरीर और आत्मा दोनों हैं; उसने बीमारी, चोट और मृत्यु सही; उसमें सामान्य भौतिक सीमितताए थीं; और ऐसी कई अन्य बातें भी।

परन्तु जब हम इस प्रकार से यीशु के बारे में बात करते हैं, तो चित्र और भी जटिल हो जाता है क्योंकि यीशु कुछ महत्वपूर्ण रूपों में अन्य मनुष्यों से भिन्न था। पहली बात यह कि यीशु एक सिद्ध मनुष्य था, वहीं हम सब में कमियाँ हैं। और इसका परिणाम हमारे मध्य कुछ महत्वपूर्ण भिन्नताओं में निकलता है। उदाहरण के तौर पर, प्रत्येक शेष मनुष्य ने पाप किया है। हम इस विषय को 1राजा 8:46; भजन 130:3; भजन 143:2; रोमियों 5:12; गलातियों 3:22 और कई अन्य अनुच्छेदों में देख सकते है। एक उदाहरण के रूप में रोमियों 3:10-12 से इन शब्दों पर ध्यान दें:

> कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं। कोई समझदार नहीं; कोई परमेश्वर का खोजने वाला नहीं। सब भटक गए हैं, सब के सब निकम्मे बन गए हैं; कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं। **(रोमियों 3:10-12)**

परन्तु यीशु भिन्न है। पाप के बिना उसका जन्म हुआ और उसने सिद्ध रूप से पापरहित जीवन बिताया। बाइबल इब्रानियों 4:14-15 और 9:14 जैसे अनुच्छेदों में उसकी पापरहित अवस्था के बारे में बताती है। अत: हम किस प्रकार इस विचार का मेल उस दावे के साथ कराते हैं कि यीशु में एक सच्चा और संपूर्ण मानवीय स्वभाव था? इसका सरल उत्तर यह है कि पाप की आज्ञा, और यहां तक कि पाप करने की योग्यता भी मानव होने में आवश्यक नहीं है।

यह सत्य है कि आरंभ से ही परमेश्वर ने मनुष्य-जाति को पाप करने की योग्यता के साथ रचा था। आदम और हव्वा ने इस बात को उत्पत्ति 3 में प्रमाणित किया जब उन्होंने भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष से फल को खाया। परन्तु हमें यह स्वीकार करना ज़रूरी है कि पाप करने से पूर्व वे मनुष्य ही हैं। अत: एक ऐसा मनुष्य होना संभव है जो पाप नहीं करता। और, वस्तुत:, जब हम मरते और स्वर्ग जाते हैं, तो वास्तव में हम पाप करने की योग्यता को खो देंगे, जैसा कि इब्रानियों 12:23 हमें सिखाता है। परन्तु हम फिर भी पूर्ण रूप से मनुष्य ही रहेंगे। अत: जब पाप इस पतन हुए संसार में हमारे स्वभाव को दर्शाता है अगले संसार में यह हमारे इस स्वभाव को नहीं दर्शाएगा। और इसलिए, पापमयता मनुष्य-जाति का एक अनिवार्य चरित्र नहीं है। इसीलिए हम कहते हैं कि यीशु के मानवीय स्वभाव में वे सभी चरित्र और विशेषताएं सम्मिलित हैं जो एक मनुष्य होने के लिए अनिवार्य होती हैं।

एक और बात जो यीशु को भिन्न बनाती है वह यह तथ्य है कि वह एकमात्र व्यक्ति है जिसमें दो स्वभाव पाए जाते हैं: एक मानवीय स्वभाव और दूसरा ईश्वरीय स्वभाव। प्रत्येक अन्य मनुष्य में केवल मानवीय स्वभाव ही पाया जाता है। परन्तु यीशु परमेश्वर और मनुष्य दोनों है, एक ही समय में पूर्ण मानव और पूर्ण ईश्वरीय दोनों। अब बाइबल स्पष्ट रूप से यह नहीं बताती कि किस प्रकार मसीह के दो स्वभाव उसके एक व्यक्तित्व में संयोजित होते हैं। और इस संयोजन को स्पष्ट करने में पाई जाने वाली समस्याओं ने प्रारंभिक कलीसिया में कई विवादों की ओर अग्रसर किया। परन्तु अंत में कलीसिया पवित्र-वचन के विवरणों से दूर हुए बिना इस बात पर सहमत हुई जिसने मसीह के एक व्यक्तित्व और उसके दो स्वभावों की पुष्टि की।

मसीह के व्यक्तित्व में मानवीय और ईश्वरीय दोनों स्वभावों के अस्तित्व का वर्णन करने में प्रयोग किया गया तकनीकी शब्द “हाइपोस्टाटिक संयोजन” है। यद्यपि यह हमारे आधुनिक कानों के लिए अजीब सा शब्द लगे, फिर भी हम इसे समझ सकते हैं जब हम सोचते हैं कि प्रारंभिक कलीसिया में इसका किस प्रकार प्रयोग किया जाता था। प्रारंभिक कलीसिया में “हाइपोस्टासिस” एक ऐसा शब्द था जिसका प्रयोग सामान्य रूप से उस शब्द के लिए किया जाता था जिसे हम व्यक्तित्व कहते हैं, विशेषकर त्रिएकता के एक व्यक्तित्व के लिए।

उदाहरण के तौर पर, चौथी सदी के कलीसिया के अगुवे (चर्च फादर) बासिल ने अपनी कृति ऑन द होली स्पिरिट के अध्याय 18 में शब्द हाइपोस्टासिस का प्रयोग इस प्रकार से किया:

> एक ही परमेश्वर और पिता है, एक ही पुत्र और एक ही पवित्र आत्मा। हम एक-एक करके प्रत्येक हाइपोस्टासिस की घोषणा करते हैं।

यहां बासिल का अर्थ वही है जो हमारा होगा यदि हम यह कहें, "हम प्रत्येक व्यक्तित्व की अलग-अलग घोषणा करते हैं।" तो "हाइपोस्टाटिक संयोजन" की धर्मशिक्षा एक हाइपोस्टासिस या पुत्र-परमेश्वर में ईश्वरीय स्वभाव और मानवीय स्वभाव के संयोजन के विषय में बात करती है। संक्षिप्त रूप में कहें तो, यह कहती है:

> यीशु दो भिन्न स्वभावों (ईश्वरीय स्वभाव और मानवीय स्वभाव) के साथ एक व्यक्तित्व है जिसमें प्रत्येक स्वभाव अपने चरित्रों को रखता है।

पुत्र-परमेश्वर में इसके सभी चरित्रों के साथ ईश्वरत्व सदैव रहा है। और जब उसने मानव रूप में गर्भधारण किया और जन्म लिया, तो उसने अपने व्यक्तित्व में मनुष्य होने के सभी मूलभूत चरित्रों को शामिल कर लिया, जैसे कि शरीर और आत्मा।

एक स्थान जहां नया नियम हाइपोस्टाटिक संयोजन की बात करता है वह है फिलिप्पियों 2:5-7, जहां पौलुस ने इन शब्दों को लिखा:

> मसीह यीशु... ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी... अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया और दास का स्वरूप धारण किया और मनुष्य की समानता में हो गया। (फिलिप्पियों 2:5-7)

यहां पौलुस ने स्पष्ट किया कि यीशु का अस्तित्व परमेश्वर के रूप था और उसमें पूर्ण ईश्वरीय स्वभाव था। तब उसने देहधारण किया, पहले से रखे हुए ईश्वरीय स्वभाव में मानवीय स्वभाव को जोड़ते हुए। अब पौलुस का कथन कि यीशु ने "अपने आप को शून्य कर दिया" या इस तरह से कहें कि "अपने आप को खाली कर दिया" ने मसीहियों को कभी-कभी असमंजस में डाल दिया है।

कुछ लोगों ने भ्रमपूर्वक यह सोचा कि यीशु ने अपनी महिमा या अपने ईश्वरीय स्वभाव को अलग रख दिया है। परन्तु जैसा हमने पूर्व के अध्यायों में देखा है, यह असंभव है। परमेश्वर का स्वभाव अपरिवर्तनीय है। परमेश्वर अपने अनिवार्य चरित्रों को अलग नहीं कर सकता और संपूर्ण स्वभाव को तो बिल्कुल भी नहीं।

सौभाग्यवश, पौलुस ने दो कृदन्ती शब्द-समूहों के साथ इसे समझाने के द्वारा इस शब्द-समूह को स्पष्ट कर दिया: दास का स्वभाव लेते हुए और मनुष्य की समानता में बनते हुए। ये शब्द-समूह हमें बताते हैं कि किस प्रकार यीशु "शून्य बना" या "अपने आप को खाली किया"। विशेषकर, यीशु ने अपने आप को खाली किया अपने ईश्वरीय स्वभाव को खोने के द्वारा नहीं, बल्कि एक अतिरिक्त स्वभाव को लेने के द्वारा- मानवीय स्वभाव जिसने उसकी ईश्वरीय महिमा को बदल नहीं दिया परन्तु ढ़क दिया।

शायद हाइपोस्टाटिक संयोजन को स्पष्ट करने वाला सबसे प्रसिद्ध कथन सार्वभौमिक परिषद का विश्वास-कथन था जो 451 ईस्वी में उत्तरी एशिया माइनर के चाल्सीदोन शहर में आयोजित की गई थी। चाल्सीदोन की परिषद मसीह के व्यक्तित्व और स्वभावों की पारंपरिक धर्मशिक्षाओं का बचाव करने और इन विषयों पर कई भिन्न-भिन्न झूठी शिक्षाओं का खण्डन करने के लिए आयोजित की गई थी।

इस परिषद द्वारा तैयार किए गए कथन को कई नामों से जाना जाता है, जैसे चाल्सीदोनियन विश्वास-कथन या "प्रतीक" और चाल्सीदोन की परिभाषा। इसमें से एक भाग को सुनें:

> हमारा प्रभु यीशु मसीह परमेश्वरत्व में सिद्ध है और मनुष्यत्व में भी सिद्ध है; वह सच्चा परमेश्वर और सच्चा मनुष्य है, उसमें सच्ची आत्मा और देह है... सब बातों में हमारे समान है, पापरहित है... उसे दो स्वभावों में समझा जाना ज़रूरी है, असमंजसरहित, अपरिवर्तनीय, अविभाज्य, अवियोज्य; स्वभावों की भिन्नता किसी भी तरह से संयोजन के द्वारा समाप्त नहीं हुई है, बल्कि प्रत्येक स्वभाव की विशेषता सुरक्षित रखी गई है, और एक व्यक्तित्व और एक जीवन में मिलते हुए।

चाल्सीदोनियन विश्वास-कथन की अधिकांश भाषा-शैली बहुत ही तकनीकी है। परन्तु हम इसे दो बिंदुओं में सारगर्भित कर सकते हैं। एक तरफ, यीशु का केवल एक ही व्यक्तित्व है। उसके दो व्यक्तित्व या दो मस्तिष्क नहीं हैं, जैसे कि एक मानवीय व्यक्तित्व ने अपने शरीर में ईश्वरीय व्यक्तित्व को स्थान दिया हो। और वह एक व्यक्तित्व नहीं है जो किसी तरह दो भिन्न व्यक्तित्वों या मस्तिष्कों का संयोजन हो, जैसे कि एक ईश्वरीय व्यक्तित्व मानवीय व्यक्तित्व में विलीन हो गया हो। वह सदैव परमेश्वर के पुत्र के रूप में समान अनन्त व्यक्तित्व है और रहा है।

इसके साथ-साथ, यीशु में दो भिन्न स्वभाव पाए जाते हैं: मानवीय स्वभाव और ईश्वरीय स्वभाव। ये दोनों स्वभाव पूरे और संपूर्ण हैं, उसी प्रकार जिस प्रकार पिता का स्वभाव पूर्ण रूप से ईश्वरीय है, और मनुष्य का स्वभाव पूर्ण रूप से मानवीय है। यीशु में वे सभी विशेषताएं हैं जो ईश्वरत्व के लिए अनिवार्य हैं, और वे सभी विशेषताएं भी हैं जो मानवीयता के लिए अनिवार्य हैं।

इससे बढ़कर, यीशु के दो व्यक्तित्व एक-दूसरे से भिन्न हैं। उसमें कोई मिला-जुला स्वभाव नहीं हैं जो उसकी ईश्वरीय और मानवीय दोनों विशेषताओं को संयोजित करता है। न ही उसकी मानवीय विशेषताएं उसकी ईश्वरीय विशेषताओं में बाधा पहुँचाती हैं, या उसकी ईश्वरीय विशेषताएं उसकी मानवीय विशेषताओं को बढ़ाती हैं। प्रत्येक स्वभाव पूर्ण रूप से अपरिवर्तनीय रहते हैं।

> मैं सोचता हूँ कि यह बहुत ही रुचिकर है कि किस तरह इब्रानियों की पत्री इस बात पर बल देती है कि यह कितना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ, महान् महायाजक, पूर्ण रूप से परमेश्वर और मनुष्य दोनों हो। वह अनन्त रूप से परमेश्वर है, सृष्टिकर्त्ता जो अपने शब्द की सामर्थ के द्वारा सब चीजों को कायम रखता है। वह पूर्ण रूप से परमेश्वर है। और फिर इब्रानियों की पत्री कहती है, हमारे लिए उसने हमारी भांति मांस और लहू धारण किया, क्योंकि हमें एक ऐसे महायाजक की आवश्यकता थी जो पूर्ण रूप से मानवीय हो। वह हमारा भाई है। वह एक ऐसे दृष्टिकोण से हमारे लिए मध्यस्थता कर सकता है जो हमारे समान मानवीय स्वभाव रखता है, जिसने संपूर्ण आज्ञाकारिता के साथ हर परख और परीक्षा को सहा है, और जो अच्छी तरह से जानता है कि मानवीय परख से होकर गुजरना क्या होता है। इसलिए हमें मानवीय महायाजक, एक भाई की आवश्यकता है। हमें ईश्वरीय महायाजक की भी आवश्यकता है जो हमारे लिए मध्यस्थता करने को सदैव जीवित है। और वह हमारे पास यीशु मसीह के व्यक्तित्व में है।
>
> डॉ. डेनिस जाँनसन

उसके अनुयायी बनकर जीने में हम मसीह के मनुष्यत्व से अनेक बातों को देख सकते हैं। जैसे पौलुस ने 1तिमुथियुस 2:5 में लिखा है, इसका अर्थ है कि हमारे पास हमारे और परमेश्वर के बीच एक प्रभावशाली मध्यस्थ है, ताकि उसकी मृत्यु के द्वारा हम क्षमा प्राप्त कर सकते हैं और पिता के साथ मेल करवाए लोगों के समान रह सकते हैं। और जिस प्रकार पौलुस ने रोमियों 5:12-19 में सिखाया था, इसका अर्थ है कि दूसरे आदम के रूप में यीशु ने उनमें से एक नई मानव प्रजाति की रचना की है जो उस पर विश्वास करते हैं, हमें फिर से सृष्टि में सम्मान और आदर का स्थान प्रदान करते हुए। इसी कारणवश, हमारे

अंदर वह सामर्थ है कि हम उस प्रकार से जीवन बिता सकते है जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता है, और उसके स्वर्गीय राज्य के समान संसार को ढ़ालने की भी सामर्थ है। और एक व्यक्तिगत स्तर पर, जब हम हमारे जीवनों में पाप और दुःखों से संघर्ष करते हैं, तो हम साहस के साथ अनुग्रह के सक्हासन के पास पहुंच सकते हैं, यह जानते हुए कि हमारा संपूर्ण मानवीय उद्धारकर्त्ता हमारी पीड़ाओं और कमज़ोरियों को समझता है और उनके साथ सहानुभूति प्रकट करता है, और उसे उस प्रकार से प्रत्युत्तर देने में उत्सुक बनाता है जो हमारे दुःखों से राहत दे, हमारे चरित्र का निर्माण करे और हमारे अनन्त पुरस्कार को बढ़ाए। ये कुछ तरीके हैं जिनके द्वारा मसीह का पूर्ण मनुष्यत्व हमारे जीवनों को प्रभावित करता है।

हमारे अध्याय में अब तक हमने यीशु मसीह के ईश्वरत्व और मनुष्यत्व दोनों की जांच कर ली है। इस समय हम प्रेरितों के विश्वास-कथन में उल्लिखित मसीह के कार्य पर चर्चा करने को तैयार हैं।

कार्य

पिछली कुछ सदियों से, धर्मविज्ञानियों के लिए दो विचारों के रूप में यीशु के कार्य के विषय में बात करना सामान्य बात रही है। पहला, उसका दीन होना है जिसमें उसने कमजोर मानवीय स्वभाव को लेने और पतन हुई मनुष्य-जाति को छुड़ाने के लिए पृथ्वी पर दुःख उठाने के द्वारा अपने आप को नम्र किया। और दूसरा, उसका ऊँचा उठाया जाना है, जिसमें पिता-परमेश्वर ने मसीह की छिपी हुई ईश्वरीय महिमा को प्रकट किया और उसे अतिरिक्त सम्मान और प्रशंसा प्रदान की। इन श्रेणियों को स्पष्ट रूप में प्रेरितों के विश्वास-कथन में उल्लिखित नहीं किया गया है, परन्तु यीशु के कार्य के बारे में सोचने में वे हमारे लिए काफी सहायक मार्ग हैं।

जैसे हम इस अध्याय में यीशु के कार्य पर ध्यान देते हैं, तो पहले हम उसके दीन होने की ओर मुड़ेंगे, उन बातों की ओर जिन्होंने उसकी महिमा को छिपा या ढ़क लिया। और दूसरा, हम उसके ऊँचे उठाए जाने पर ध्यान देंगे, वह कार्य जिसने उसकी महिमा प्रकट की जो भविष्य में और भी अधिक महिमा का परिणाम होगी। तो आइए पृथ्वी पर उसकी सेवकाई के दौरान मसीह के दीन होने के साथ प्रारंभ करें।

दीन होना

दीन बनने के यीशु के कार्य का उल्लेख प्रेरितों के विश्वास-कथन की निम्नलिखित पंक्तियों में किया गया है:

> (वह) पवित्र आत्मा से
> कुंवारी मरियम के द्वारा पैदा हुआ।
> उसने पोन्तियस पिलातुस के हाथों दुःख सहा,
> क्रूस पर चढ़ाया गया, मारा गया और गाड़ा गया;
> वह अधोलोक में उतरा।

इन सभी कार्यों में, परमेश्वर के पुत्र ने अपनी महिमा को दृष्टि से ढाँप या छिपा लिया, और स्वयं को दुःख और अनादर के अधीन किया। क्योंकि पुत्र का ईश्वरीय स्वभाव अपरिवर्तनीय है, इसलिए उसे दीन नहीं किया जा सकता। अत: उसका दीन होना उसके मानवीय स्वभाव तक ही सीमित था। फिर भी, क्योंकि उसका मानवीय स्वभाव उसके व्यक्तित्व से सिद्ध रूप से संयोजित है, इसलिए उसके ईश्वरीय व्यक्तित्व ने इस दीन होने के अनुभव को पूर्ण रूप से अनुभव किया।

इस अध्याय में, हम यीशु के दीन होने के कार्यों की चर्चा दो शीर्षकों के तले करेंगे: उसका देहधारण और उसका दुःखभोग। आइए हम उसके देहधारण, जब वह पृथ्वी पर मनुष्य के रूप में आया, पर चर्चा करते हुए प्रारंभ करें।

देहधारण

धर्मविज्ञानी शब्द "देहधारण" यीशु के स्थायी रूप से मानवीय स्वभाव को लेने को दर्शाता है। शाब्दिक रूप से शब्द "देहधारण," "शरीर को ग्रहण" करने को बताता है। परन्तु जैसा हम देख चुके हैं, मसीही धर्मविज्ञान ने सदैव इस बात को कायम रखा है कि यीशु में मानवीय आत्मा भी थी। इसलिए जब हम धर्मविज्ञान में देहधारण के बारे में बात करते हैं, तो हम सामान्यत: यीशु के संपूर्ण मानवीय स्वभाव का उल्लेख कर रहे हैं। पवित्र-वचन कई स्थानों पर मसीह के देहधारण के बारे में बात करता है, जैसे यूहन्ना 1:1 और 14; फिलिप्पियों 2:6-7; और इब्रानियों 2:14-17।

यूहन्ना 1:1 और 14 शायद तकनीकी शब्द "देहधारण" का स्रोत है। सुनें यूहन्ना ने वहां क्या लिखा है:

> आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था... और वचन देहधारी हुआ... और हमारे बीच डेरा किया। (यूहन्ना 1:1, 14)

ध्यान दें यूहन्ना ने कहा था कि परमेश्वर का पुत्र "देहधारी हुआ"। उसका तर्क यह था कि यीशु ने एक वास्तविक मानवीय शरीर के साथ एक वास्तविक मानवीय स्वभाव को ग्रहण किया।

प्रेरितों के विश्वास-कथन में यीशु के देहधारण के साथ जुड़े कार्य उसका गर्भधारण और जन्म हैं। हमने यीशु के वंश के विषय में इन घटनाओं के बारे में पहले चर्चा की थी, और यह भी दर्शाया था कि वे उसके मनुष्यत्व को प्रमाणित करते हैं। इस बिंदु पर हम इन घटनाओं पर पुन: ध्यान देना चाहते हैं, परन्तु मसीहा के रूप में यीशु के कार्य के दृष्टिकोण से। देहधारण क्यों आवश्यक था? यीशु ने इसके द्वारा क्या पूरा किया?

वचन सिखाता है कि यीशु के देहधारण के कार्य ने कम से कम तीन कार्यों को पूरा किया: पहला, इसने परमेश्वर के पुत्र को दाऊद के वंश का राजा होने का वैधानिक अधिकार दिया। दूसरा, इसने उसे दया और सहानुभूति प्रदान की जिनकी उसे एक प्रभावशाली महायाजक बनने में आवश्यकता थी। और तीसरा, यीशु को पाप के लिए प्रायश्चित बलि बनने में देहधारण आवश्यक था। आइए हम इन प्रत्येक बिंदुओं पर संक्षिप्त रूप से चर्चा करें, इस तथ्य से आरंभ करते हुए कि दाऊद के वंश के राजा को मनुष्य होना आवश्यक था।

जैसा कि हम पहले उल्लेख कर चुके हैं कि परमेश्वर द्वारा दाऊद से की गई प्रतिज्ञाओं को पूरी होने के लिए मसीहा को मनुष्य होना ज़रूरी था। इसलिए, इस बिंदु पर हम यह ध्यान देना चाहते हैं कि किस प्रकार यीशु के देहधारण के कार्य ने उसे दाऊद के सक्रंहासन पर अधिकार प्रदान किया। हमारे समक्ष समस्या यह है कि दाऊद के सक्रंहासन का उत्तराधिकार पाने का वैधानिक अधिकार केवल पुत्रों को ही मिल सकता है। इसलिए, यीशु दाऊद के सक्रंहासन का दावा तभी कर सकता है यदि उसका कोई मानवीय पिता हो और वह दाऊद के वंश से हो।

इस समस्या का समाधान करने के लिए यीशु कुंवारी मरियम के द्वारा देहधारी हुआ जिसकी मंगनी यूसुफ़ से हो चुकी थी। और जिस प्रकार हम मत्ती अध्याय 1 और लूका अध्याय 3 में पाई जाने वाली वंशावलियों में देखते हैं, यूसुफ़ दाऊद का प्रत्यक्ष वैधानिक वंशज था। अत: जब यूसुफ़ ने मरियम से विवाह किया और यीशु को ग्रहण किया तो यीशु ने यूसुफ़ की वैधानिक वंशावली को प्राप्त कर लिया, और इसके साथ मसीहारूपी राजा होने का अधिकार भी पा लिया।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पुत्र-परमेश्वर को दाऊद के वंश का राजा होने का वैधानिक अधिकार प्रदान करने के साथ-साथ, देहधारण ने उसे दया और सहानुभूति भी प्रदान की जिसकी आवश्यकता उसे अपने लोगों के लिए एक प्रभावशाली महायाजक बनने में थी।

> बाइबल हमें बताती है कि यीशु के देहधारण ने उसे महायाजक बना दिया जो हमारी दुर्बलताओं की भावना के साथ द्रवित हो सकता है। और इसका अर्थ है कि वह और अधिक प्रभावशाली महायाजक है इसकी अपेक्षा कि वह ऐसा महायाजक होता जिसके पास मनुष्य होने की पूर्णता, और हमारे साथ एवं हमारे लिए अनुभव न होता। ऐसे कई तरीके हैं जो प्रकट हुए हैं। एक यह है कि यीशु ने पतन हुए इस संसार में अपने स्वयं के जीवन और अनुभव में हमारे समान सब मानवीय समस्याओं को सहा और उनका सामना किया, कि देहधारित परमेश्वर उन सब पीड़ाओं और दुःखों और निराशाओं और धोखों और घावों को उसी प्रकार से जानता है जिस प्रकार से वह जो इस पतन हुए संसार में अनुभव करता है। यह उसके लिए कोई सिद्धांतरूपी बात नहीं है, यह कोई ऐसी बात नहीं है जिससे वह अनन्तता में बहुत दूर खड़ा रहा और केवल कल्पना करता रहा। यह कुछ ऐसी बात है कि वह हमारे कमजोर मांस, हमारे कमजोर लहू में इस संसार में आया और स्वयं अनुभव किया।
>
> डॉ. जे. लिगोन डन्कन 3

इब्रानियों की पत्री के लेखक ने देहधारण के इस पहलू की चर्चा इब्रानियों 2:17-18 में की है। सुनिए उसने वहां क्या लिखा:

> (यीशु) को चाहिए था कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने; जिससे वह उन बातों में जो परमेश्वर से संबंध रखती हैं, एक दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक बने... क्योंकि जब उसने परीक्षा की दशा में दुःख उठाया, तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है जिनकी परीक्षा होती है। (इब्रानियों 2:17-18)

यीशु को दाऊद के वंश का राजा बनने के अधिकार देने और एक प्रभावशाली महायाजक बनने के अनुभव के अतिरिक्त, देहधारण ने यीशु को अपने लोगों के लिए प्रायश्चित का बलिदान बनने के योग्य बनाया।

जिस प्रकार हमने इस अध्याय में पहले देखा था, अपने लोगों के लिए अपना प्राण देने हेतु यीशु को मनुष्य बनना आवश्यक था। परन्तु प्रायश्चित के लिए उसका मनुष्यत्व इतना अनिवार्य क्यों था? इसका उत्तर है कि परमेश्वर ने मानवीय पाप के दण्ड के रूप में मानवीय मृत्यु को नियुक्त किया था। पवित्र-वचन उत्पत्ति 2:17; रोमियों 5:12 और 6:23; याकूब 1:15 एवं कई अन्य स्थानों पर इस बात को सिखाता है। आदम से शुरु होकर पाप पूरी मनुष्य-जाति में फैल गया, और इससे मानवीय मृत्यु का वैधानिक दण्ड भी आया। इसी कारणवश, केवल वास्तविक मांस और लहू की मानवीय मृत्यु ही परमेश्वर की मांग को पूरा कर सकती थी।

सुनें पौलुस ने रोमियों 5:15-19 में किस प्रकार यीशु के मनुष्यत्व और हमारे उद्धार के बीच संबंध को स्पष्ट किया:

> जब एक मनुष्य के अपराध से बहुत लोग मरे, तो परमेश्वर का अनुग्रह और उसका जो दान एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के, अनुग्रह से हुआ बहुत से लोगों पर अवश्य ही अधिकाई से हुआ...क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान

> बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे... क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे। **(रोमियों 5:15-19)**

पौलुस ने बार-बार इस बात पर बल दिया है कि यीशु की मानवीय धार्मिकता आदम के मानवीय पाप का विरोधी रूप एवं समाधान थी। पौलुस ने बिल्कुल स्पष्ट कर दिया कि जो आदम ने बिगाड़ा था उसे सुधारने के लिए यीशु को मनुष्य बनना आवश्यक था। मनुष्य-जाति पर जो दण्ड परमेश्वर ने रखा था उसे लेने और अन्य मनुष्यों में उसकी धार्मिकता को फैलाने के लिए उसे मनुष्य बनना आवश्यक था।

> कभी-कभी हम कट्टरवादी, सुसमाचरिक मसीहियों के रूप में मसीह के ईश्वरत्व पर इतना बल देते हैं कि हम यह भूल जाते हैं कि यह उसका मनुष्यत्व है जो हमारा उद्धार करता है। क्योंकि यीशु एक सच्चा मनुष्य बना, तभी वह हमारे लिए, हमारे पापों के लिए दुःख उठा और मर सका। इसलिए, यीशु का मनुष्यत्व हमारे उद्धार के लिए मूलभूत है।
>
> डॉ. मार्क स्ट्रॉस

यीशु के देहधारण की इस धारणा के साथ, आइए उसके दुःख-भोग पर चर्चा करें, जो प्रेरितों के विश्वास-कथन में उल्लिखित दीन होने के उसके कार्य का दूसरा पहलू है।

दुःख-भोग

धर्मविज्ञानीय शब्द “दुःख-भोग” यूनानी क्रिया पास्को से आता है जिसका अर्थ है “दुःख उठाना”। यह यीशु के दुःख उठाने और उसकी मृत्यु के बारे में बताता है, उसके पकड़वाए जाने की रात से प्रारंभ होकर। यीशु के दुःख-भोग का उल्लेख प्रेरितों के विश्वास-कथन की इन पंक्तियों में किया गया है।

> उसने पोन्तियस पिलातुस के हाथों दुःख सहा,
> क्रूस पर चढ़ाया गया, मारा गया और गाड़ा गया;
> वह अधोलोक में उतरा।

अधिकांश मसीही यीशु के पकड़वाए जाने, दुःख उठाने और क्रूसीकरण की कहानी से परिचित हैं। अत: यहां उन विवरणों की चर्चा करने की अपेक्षा हम उस कारण पर ध्यान देंगे कि यीशु ने स्वयं को इन घटनाओं के अधीन क्यों किया।

यीशु के दुःख उठाने के विषय में पवित्र-वचन स्पष्ट करता है कि यीशु को आज्ञाकारिता सिखाना और उसे पिता को सुपुर्द करना आवश्यक था। जिस प्रकार हम इब्रानियों 5:8 में पढ़ते हैं:

> (यीशु) ने दुःख उठा-उठाकर आज्ञा माननी सीखी। **(इब्रानियों 5:8)**

जिस प्रकार हम 1पतरस 2:20-21 में पढ़ते हैं:

> यदि तुम भला काम करके दुःख उठाते हो, और धीरज धरते हो तो यही परमेश्वर को भाता है। और तुम इसी के लिए बुलाए भी गए हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिए दुःख उठाकर तुम्हें एक आदर्श दे गया हैं कि तुम भी उसके पद-चिन्हों पर चलो। **(1पतरस 2:20-21)**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

उसके दुःख उठाने के द्वारा मसीह ने पिता की इच्छा को पूरा किया और उसके द्वारा अपने आप को पिता के सुपुर्द किया। पिता की सिद्ध रूप से आज्ञा मानने के द्वारा उसने एक अनन्त पुरस्कार प्राप्त किया- एक ऐसा पुरस्कार जो अब वह अनुग्रह से हमारे साथ साझा करता है।

परन्तु पिलातुस के हाथों मसीह का सताव दुःख उठाने के साथ समाप्त नहीं हुआ; वह क्रूसीकरण द्वारा उसकी मृत्यु तक चला। यह शायद दीन किए जाने के मसीह के कार्य का सबसे जाना-पहचाना पहलू है, और भले कारण के लिए: यह उसकी मृत्यु ही थी जिसने हमारे पाप का प्रायश्चित किया और हमारे उद्धार को पूर्ण किया।

> पाप के लिए प्रभु यीशु की मृत्यु (इसी प्रकार से इसे पूरे नए नियम में प्रस्तुत किया गया है) ने अपना कार्य किया, यदि इसे इस तरह से कहा जा सकता है, क्योंकि वह दण्ड के लिए हमारा स्थानापन्न बना। "स्थानापन्न" का अर्थ है उसने हमारा स्थान ले लिया, और "दण्ड" इस बात को दर्शाता है कि उसने दण्ड और सजा को सहने के लिए हमारा स्थान ले लिया, जिसके हकदार हम स्वयं परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करने के द्वारा बन गए थे- एक ऐसा दण्ड जो परमेश्वर उसकी व्यवस्था का उल्लंघन करने के कारण देने वाला था। परमेश्वर का स्वभाव ऐसा है, मेरे कहने का अर्थ है कि वास्तव में यह उसकी पवित्रता है, उसका स्वभाव ऐसा है कि यदि कहीं पाप होता है तो वहां उसका प्रतिफल होना आवश्यक है। और उद्धार का अद्भुत, बुद्धिमान, प्रेमपूर्ण तरीका जिसकी योजना परमेश्वर ने बनाई वह दण्ड को हमारे दोषी कंधों से हटाना था। यदि मैं इसे इस तरीके से कह सकूँ, हमारे कंधों से निष्पाप, दोषरहित उसके देहधारी पुत्र के कंधों पर डाल दिया, जो उस दोषरहित जानवर के बलिदान के नमूने को पूर्ण करता है जिसकी मांग पूरे पुराने नियम में की जाती है।
>
> डॉ. जे. आई. पेकर

प्रेरित पौलुस ने प्राय: क्रूसीकरण को सुसमाचार का केन्द्र बताया है। हम इस बात को रोमियों 6:6; 1कुरिन्थियों 1:17-18; गलातियों 6:14 और कुलुस्सियों 1:20 जैसे स्थानों में पाते हैं। एक उदाहरण के रूप में, गलातियों 2:20-21 में पाए जाने वाले शब्दों को सुनें:

> मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है जिसने मुझसे प्रेम किया और मेरे लिए अपने आपको दे दिया। मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता; क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती तो मसीह का मरना व्यर्थ होता। (गलातियों 2:20-21)

मसीह का कार्य वह प्रमुख कार्य था जिसने हमारे उद्धार के कार्य को पूरा किया। और इसी कारणवश, संपूर्ण इतिहास में यह सुसमाचार की प्रस्तुति का सबसे प्रमुख भाग रहा है।

यीशु के क्रूसीकरण के पश्चात् उसके शरीर को एक कब्र में गाड़ दिया गया, जहां वह तीन दिनों तक जीवनरहित रहा। पूर्ण मनुष्य होने के रूप में यीशु मृत्यु के सामान्य मानवीय अनुभव से होकर गुजरा। प्रेरितों को विश्वास-कथन में यह बात "वह अधोलोक में उतरा" शब्दों में पाई जाती है। इस समय, यीशु का शरीर कब्र में पड़ा रहा वहीं उसकी आत्मा मृतकों के स्थान में उतर गई।

अब, हमें यह उल्लेख करना चाहिए कि आधुनिक धर्मविज्ञानी "वह अधोलोक में उतरा" शब्दों के अर्थ पर पूर्ण रूप से सहमत नहीं होते। आज कई कलीसियाएँ इस पंक्ति का अर्थ इस प्रकार निकालती हैं कि यीशु को गाड़ा गया था। परन्तु यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि प्रेरितों के विश्वास-कथन का वास्तव में यह

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अर्थ नहीं था। पहली बात तो यह कि विश्वास-कथन दोनों बातों का उल्लेख करती है कि यीशु गाड़ा गया और कि वह अधोलोक में उतरा। किसी भी तरह से देखें तो ये शब्द-समूह ऐतिहासिक प्रलेख में अलग-अलग और क्रमिक रूप में पाए जाते हैं। दूसरी बात यह है कि जहां यह बात सही है कि शब्द "अधोलोक" का सामान्य अर्थ "भूमि के नीचे" ही होता है, वहीं पवित्र-वचन और प्रारंभिक कलीसिया में इसका प्रयोग हमेशा भूमि के नीचे के संसार का उल्लेख करने के लिए ही किया जाता था जिसमें मृतकों की आत्माएँ पाई जाती हैं। हम इसे प्रारंभिक कलीसिया में स्थायी अर्थ में सोच सकते हैं- ऐसा अर्थ जिसे प्राचीन मसीही सदैव अपने मन में रखते थे जब वे शब्द "अधोलोक" का प्रयोग करते थे।

इन कारणों से, यह निष्कर्ष निकालना सर्वोत्तम है कि प्रेरितों का विश्वास-कथन यह सिखाना चाहता था कि यीशु की आत्मा उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के समय के बीच वास्तव में नीचे के संसार में गई। परन्तु यह अधोलोक किस प्रकार का था?

प्राचीन जगत में ब्रह्मांड को प्राय: लम्बवत् संरचना की भाषा में वर्णित किया जाता था। पृथ्वी जहां मनुष्य-जाति रहती थी, बीच में थी। स्वर्ग, परमेश्वर और उसके स्वर्गदूतों का क्षेत्र, को आकाश में समझा जाता था। और पृथ्वी के नीचे एक अंधकार से भरा संसार था जहां मृतकों की सभी आत्माएँ वास करती थीं। इब्रानी पुराने नियम में इसे लगभग सामान्यत: शियोल कहा जाता था; यूनानी नए नियम में और पुराने नियम के यूनानी अनुवाद में इसे हेड्स कहा जाता था।

पुराने नियम में, कहा जाता था कि भले और बुरे दोनों की आत्माएँ अंतिम न्याय की प्रतीक्षा करती हुई वहां वास करती हैं। नए नियम में, हेड्स का उल्लेख सामान्यत: बुरी आत्माओं के निवास के रूप में किया जाता है, जैसा कि हम लूका 10:15 में पाते हैं। फिर भी, कम से कम यीशु के पुनरुत्थान से पूर्व, नया नियम भी इस बात की पुष्टि करता है कि धर्मियों की आत्माएँ हेड्स में थीं। विशेषकर, प्रेरितों के काम 2:27-29 हेड्स में धर्मी मनुष्य राजा दाऊद के होने के बारे में बात करता है।

अब, इसका अर्थ यह नहीं है कि हेड्स या अधोलोक में प्रत्येक के साथ एक जैसा व्यवहार किया जाता था। लाज़र और धनी मनुष्य के विषय में यीशु का दृष्टांत, जिसे लूका 16:19-31 में देखा जा सकता है, दर्शाता है कि दुष्टों की आत्माओं और धर्मियों की आत्माओं के बीच एक बड़ी खाई पाई जाती थी। और जहां दुष्ट यातनाओं का दुःख सहते थे, वहीं धर्मियों को आराम था। अब्राहम आराम के स्थान में रहता था। इसी कारणवश, धर्मविज्ञानियों ने हेड्स के इस भाग को "अब्राहम का स्थान" या "अब्राहम की गोद" कहा है।

कलीसिया अगुवे टरटूलियन, जिसने तीसरी सदी के प्रारंभ में लेखनों को लिखा था, ने हेड्स के विभाजन की आम धारणा को अभिव्यक्त किया है। अपनी कृति ऑन द रिज़रेक्शन ऑफ द फ्लैश के अध्याय 17 में जो लिखा है उसे सुनें:

> हेड्स में आत्माएँ अब भी यातना और आशीष पाने के जोखिम में रहती हैं...यह लाजर के उदाहरण से प्रमाणित है।

और कलीसिया अगुवे इगनेशियस ने 107 ईस्वी में अपने एपिस्टल टू द ट्रालियन्स में यह कहा था:

> पृथ्वी के नीचे बसे लोगों (से मेरा मतलब) लोगों की वह भीड़ है जो प्रभु के साथ जीवित हुई थी। क्योंकि पवित्र-वचन कहता है, "अनेक पवित्र जनों के शरीर जो मृत थे, जी उठे," और उनकी कब्रें खुल गईं। वह वास्तव में अकेला अधोलोक में उतरा, परन्तु एक भीड़ को साथ लेकर जीवित हुआ; और विभाजन की उस दरार के कारण को नष्ट कर डाला जो संसार के आरंभ से ही अस्तित्व में था।

अत: जब विश्वास-कथन कहता है कि यीशु अधोलोक में उतरा, तो इसका सबसे संभावित अर्थ यही है कि उसकी मानवीय आत्मा शरीर को छोड़कर गई आत्माओं के स्थान में उतरी। विशेषत:, वह उस क्षेत्र में उतरा जो स्थान ध्र्मियों के लिए सुरक्षित रखा गया था, उस क्षेत्र में नहीं जहाँ दुष्टों को यातनाएँ दी

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जाती हैं। अधोलोक के इस भाग में यीशु का ठहरना उसके कार्य का एक अनिवार्य भाग था क्योंकि इस कार्य ने उसकी आत्मा को एक सच्ची मानवीय आत्मा के न्यायिक दण्ड के अधीन कर दिया।

यीशु का दुःख-भोग हमें दर्शाता है कि इस पतन हुए संसार में एक सच्चा मनुष्य होने का क्या अर्थ है। यदि हमारे सिद्ध प्रभु को भी दुःख उठाना पड़ा जब उसने पाप का विरोध किया और उसका समाधान प्रस्तुत किया, तो हम जो असिद्ध हैं, हम भी दुःख उठाएँगे। वस्तुतः, जैसा पौलुस ने 2तीमुथियुस 3:12 में लिखा, उन सबको दुःख उठाना अनिवार्य है जो भक्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं। परन्तु पवित्र-वचन यह भी सिखाता है कि जब हम दुःख उठाते हैं, तो मसीह भी दुःख उठाता है। इसका अर्थ यह है कि वह हमारी पीड़ा के प्रति सहानुभूति रखता है और हमें राहत प्रदान करने के प्रति उत्सुक रहता है। और जिस प्रकार पौलुस ने कुलुस्सियों 1:24 में सिखाया, अंत में हमारे द्वारा मसीह के दुःख पूर्ण होंगे। और जब ऐसा होगा, वह अपनी महिमा में पुनः लौटेगा और हम हमारे उत्तराधिकार को प्राप्त करेंगे। हमारे दुःख उद्देश्यरहित नहीं हैं; यह परमेश्वर के द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला एक साधन है जो परमेश्वर पूरी सृष्टि को पुनः स्थापित करने के लिए इस्तेमाल कर रहा है।

जब हमने यीशु के दीन किए जाने के कार्य पर चर्चा कर ली है, अब हमें उसके ऊँचे उठाए जाने के कार्य पर ध्यान देना चाहिए, जब उसकी ईश्वरीय महिमा पुनः प्रकट की गई थी।

ऊँचा उठाया जाना

जब हम मसीह के ऊँचे उठाए जाने के बारे में बात करते हैं, तो यह स्मरण रखना ज़रूरी है कि यह उसकी छिपी हुई महिमा को प्रकट करने से कहीं बढ़कर था। दीन होने के द्वारा, पुत्र ने अपनी मूल महिमा से भी बढ़कर महिमा प्राप्त की। उसने वे कार्य किए जिन पर पिता ने आशीष दी, और उसके बलिदान ने उसके अपने उत्तराधिकार के लिए लोगों और परमेश्वर के राज्य के सक्रंहासन के दाहिनी और बैठने के अधिकार को मोल लिया। इन कार्यों के द्वारा उसके दीन होने के परिणाम के रूप में पुत्र की कुशलता, योग्यता और महिमा वास्तव में बढ़ गई।

प्रेरितों का विश्वास-कथन मसीह के ऊँचे उठाए जाने का उल्लेख निम्नलिखित सूत्रों में करता है:

> तीसरे दिन वह मृतकों में से फिर जी उठा।
> वह स्वर्ग में चढ़ गया।
> और वह सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है।
> जहां से वह जीवितों और मृतकों का न्याय करने के लिए आएगा।

मसीह का ईश्वरीय स्वभाव सदैव महान् था। उसे मृत्यु के अधीन नहीं किया गया था, या न ही स्वर्ग के सक्रंहासन से हटाया गया था। अतः, परमेश्वर के पुत्र का ऊँचा किया जाना उसके मानवीय स्वभाव तक ही सीमित था। फिर भी, अपने मानवीय स्वभाव में मसीह के अन्य सभी अनुभवों के समान, उसके ईश्वरीय स्वभाव ने पूर्ण रूप से ऊँचे उठाए जाने का अनुभव किया।

मसीह के ऊँचे उठाए जाने की हमारी चर्चा को हम चार भागों में विभाजित करेंगे। पहला, हम मृतकों में से मसीह के पुनरुत्थान के बारे में देखेंगे। दूसरा, हम उसके स्वर्गारोहण के बारे में बात करेंगे। तीसरा, हम पिता के दाहिनी हाथ उसके सक्रंहासन पर बिठाए जाने के अर्थ की जांच करेंगे। और चौथा, हम उस भविष्य के न्याय के बारे में उल्लेख करेंगे जो वह प्रदान करेगा। आइए हम मृत्यु के तीसरे दिन मृतकों से मसीह के पुनरुत्थान के साथ शुरु करें।

पुनरुत्थान

अनेक मसीही इसके महत्व को नहीं समझते, परन्तु मसीह का पुनरुत्थान हमारे उद्धार के लिए उतना ही महत्वपूर्ण था जितना कि उसकी मृत्यु। इसीलिए 1पतरस 3:21 यीशु के पुनरुत्थान के द्वारा उद्धार

पाने के बारे में बात करता है। देखें, हमारा उद्धार मात्र यही नहीं है कि मसीह ने हमें हमारे स्थान पर मोल लिया और उपहार के रूप में हमें यह दे दिया। बल्कि यह वह उपहार है जो यीशु हमें उसके साथ जुड़ने के द्वारा देता है- यही "मसीह में" बने रहना है जिसके बारे में हम नए नियम की पत्रियों में प्राय: पढ़ते हैं।

हमें उसकी मृत्यु के द्वारा क्षमा मिली है क्योंकि, उसके साथ हमारे संयोजन के द्वारा, हम क्रूस पर उसके साथ मर गए। और हम अनन्त जीवन को प्राप्त करते हैं क्योंकि हम उसके पुनरुत्थान के द्वारा नए जीवन में जीवित भी किए गए। पवित्र-वचन रोमियों 6:3-11 और 8:10-11; 2कुरिन्थियों 5:14 और 13:4; कुलुस्सियों 2:11-3:3 और अन्य कई स्थानों में इस विषय में बात करता है। एक उदाहरण के रूप में, पौलुस ने रोमियों 6:4-5 में इन शब्दों को लिखा था:

> उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उस मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएँगे। (रोमियों 6:4-5)

सारांश में, मृतकों में से जी उठने के द्वारा जो कार्य मसीह ने किया उसने इस बात को भी निश्चित किया कि जब हम विश्वास करते हैं तो हमें भी नया आत्मिक जीवन प्राप्त होता है, और कि भविष्य में हम उसके समान पुनरुत्थानित और महिमान्वित शरीरों को प्राप्त करेंगे। इस भाव में, हमें वैभव, महिमा और सम्मान प्रदान करते हुए उसका ऊँचा उठाया जाना हमारा भी ऊँचा उठाया जाना है।

> मरने में यीशु को पाप की शक्ति से परे रखा गया। आप एक मृत व्यक्ति की परीक्षा नहीं ले सकते। उसे उनकी दुष्ट शक्तियों से परे रखा गया है। परन्तु पाप यीशु को मृत्यु, अपने सबसे शक्तिशाली मित्र, के हाथ में सौंप देता है। अत: वह यीशु का मृत्यु से सामना करवाता है, और मृत्यु का सामना करने में, यीशु मृत्यु पर विजय प्राप्त करता है। और अपने लोगों के लिए इसके मायने आश्चर्यजनक होते हैं। इसलिए, प्रकाशितवाक्य 1:18 में जीवित महिमान्वित मसीह, यीशु घोषणा करता है, मैं जीवित हूँ, मैं मर गया था, और देखो अब मैं सदा-सर्वदा जीवित हूँ, और मेरे पास मृत्यु और नरक की कुँजियाँ हैं। उसने स्वयं को स्वतंत्र करने में उनका इस्तेमाल किया, परन्तु वे अभी भी उसके पास हैं क्योंकि एक दिन वह अपने लोगों को मृत्यु के बन्धन से छुड़ाने के लिए उन कुंजियों का इस्तेमाल करेगा।

डॉ. नॉक्स चैम्बलीन

> न केवल यीशु का क्रूस और पुनरुत्थान वे माध्यम हैं जिनके द्वारा हम पापों की क्षमा प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु उतना ही महत्वपूर्ण या उससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि पुनरुत्थान जगत के नए और अंतिम युग को प्रारंभ करता है। नई सृष्टि (जैसे पवित्र-वचन इसे कहता है) कब्र से, उस खाली कब्र से आरंभ होती है। यह इतिहास का नया अधिकेन्द्र / नया केन्द्र बिन्दु, नई धूरी है। हम सब अब यीशु मसीह के पुनरुत्थान के कारण अंत समयों में रह रहे हैं। उसने अंत की शुरुआत को आरंभ कर दिया है, और एक मसीही के लिए आशा यह है कि इस शुरुआत का अंत मसीह के द्वितीय आगमन पर होगा, जिसे पवित्र-वचन के अनुसार नई सृष्टि कहा जाता है।

डॉ. जोनाथान पेनिन्गटन

पुनरुत्थान के कार्य के अतिरिक्त, यीशु के ऊँचे उठाए जाने में पृथ्वी पर से उसका स्वर्गारोहण भी सम्मिलित है।

स्वर्गारोहण

स्वर्गारोहण वह घटना थी जिसमें यीशु को सदेह स्वर्ग में उठा लिया गया। पुनरुत्थान के चालीस दिनों के पश्चात् यीशु स्वर्ग में बादलों पर उठा लिए गए। लूका स्वर्गारोहण का वर्णन लूका 24:50-51 और प्रेरितों के काम 1:6-11 दोनों में करता है।

यीशु के स्वर्गारोहण ने ऐसे कई कार्यों को पूरा किया जिन्हें वह पृथ्वी पर पूरा नहीं कर पाया था। उदाहरण के तौर पर, यूहन्ना 14:2-3 में यीशु ने प्रेरितों को बताया था कि वह स्वर्ग में उनके लिए जगह तैयार करने जा रहा है। और यूहन्ना 16:7 में उसने कहा कि जब तक वह स्वर्ग में न चढ़ जाए तब तक वह कलीसिया की सेवकाई के लिए पवित्र-आत्मा को नहीं भेज सकता।

इससे बढ़कर, यीशु को वास्तव में क्रूस पर आरंभ किए प्रायश्चित के कार्य को पूर्ण करने के लिए स्वर्ग में चढ़ना ज़रूरी था। इब्रानियों के लेखक ने अपनी पुस्तक के अध्याय 8 और 9 में इस बात का तर्क दिया था। सारांश में, उसने कहा था कि पृथ्वी का मंदिर स्वर्ग के मंदिर का प्रतिरूप ही था। और उसने मसीह के प्रायश्चित के बलिदान के कार्य की तुलना उस कार्य के साथ की जो पृथ्वी पर महायाजक प्रायश्चित के बलिदान के वार्षिक दिवस में करते थे, जिसमें वे बलि के रक्त को अतिपवित्र स्थान पर ले जाते थे और वेदी पर छिड़क देते थे, और उसके द्वारा लोगों के पापों की क्षमा प्राप्त करते थे। इसी प्रकार, यीशु ने भी स्वर्ग के सच्चे मंदिर में अतिपवित्र स्थान में प्रवेश किया, और अपने स्वयं के रक्त को वेदी पर छिड़का। और इसने बलिदान के उस कार्य को पूर्ण कर दिया जो उसने क्रूस पर आरंभ किया था। सुनें किस प्रकार इब्रानियों 9:11-12 स्वर्ग में मसीह के बलिदान के कार्य का वर्णन करता है:

> जब मसीह... महायाजक होकर आया, तो उसने और भी बड़े और सिद्ध तम्बू से होकर, जो हाथ का बनाया हुआ नहीं अर्थात् इस सृष्टि का नहीं... पर अपने ही लहू के द्वारा, एक ही बार पवित्र स्थान में प्रवेश किया और अनन्त छुटकारा प्राप्त किया। (इब्रानियों 9:11-12)

इससे बढ़कर, स्वर्ग में हमारे महायाजक के रूप में, जब हम पाप करते हैं तो हमारे लिए अपने बलिदान की उपलब्धियों की निरंतर याचना करते हुए, मसीह निरंतर हमारे लिए मध्यस्थता करता रहता है। धर्मविज्ञानी स्वर्गीय मन्दिर में मसीह के निरंतर कार्य को सामान्यत: उसका अधिवेशन (सैशन) कहते हैं। और यही वह अधिवेशन (सैशन) है जो हमारे उद्धार को सुरक्षित रखता है। इब्रानियों 7:24-25 इस अधिवेशन (सैशन) का वर्णन इस प्रकार करता है:

> (यीशु) युगानुयुग रहता है, इस कारण उसका याजकपद अटल है। इसलिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा-पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिए विनती करने को सर्वदा जीवित है। (इब्रानियों 7:24-25)

जैसे कि हम यहां देखते हैं, यीशु का स्वर्गारोहण उसके छुटकारे के कार्य का एक महत्वपूर्ण पहलू था। इसके बिना, हम उद्धार प्राप्त नहीं कर सकते थे।

मसीह के पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बारे में बात करने के पश्चात्, हम स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिनी ओर उसके सिंहासन पर विराजमान होने के विषय को संबोधित करने के लिए तैयार हैं।

सिंहासन पर विराजमान होना

नया नियम पिता-परमेश्वर के दाहिनी ओर यीशु के सक्रंहासन पर बैठने के बारे में कई स्थानों पर बात करता है। आधारभूत विचार यह है कि यीशु हमारा महान् मानवीय राजा है, और कि उसका स्वर्ग में

भी सक्हासन है जो पिता के महान् सक्हासन के दाहिनी ओर है। इस परिवेश में, पिता महान् महाराजा या अधिराजा है, और पुत्र उससे निम्न राजा या जागीरदार है जो उसकी सेवा करता है। यह प्राचीन जगत के राज्यों के समान है जिसमें छोटे राजा विशाल साम्राज्य के अलग-अलग भागों पर शासन करते थे, और सम्राट को उपहार एवं सेवाएँ प्रदान किया करते थे।

> सामान्यत: जब हम मसीह के राजत्व के बारे में सोचते हैं, तो हम इसे बहुत ही महान् रूप में, कहीं ऊपर घटित सोचते हैं, और क्योंकि यीशु अब पिता-परमेश्वर के दाहिनी ओर विराजमान है, और वह राजा है। परन्तु हमें यह स्मरण रखना आवश्यक है कि यीशु अपने राजत्व में अपने मानवीय स्वभाव में ऊँचा उठाया गया था। कहने का तात्पर्य यह है कि अपने ईश्वरीय स्वभाव में यीशु सदैव राजा था। वह सदैव सब चीजों पर प्रभुता कर रहा था, परन्तु यीशु को स्वर्ग और पृथ्वी पर अधिकार मानवीय स्वभाव में दिया गया था। और यीशु दाऊद का पुत्र है, और इसलिए वह है जो इस्राएल के राष्ट्र और परमेश्वर के लोगों का प्रतिनिधित्व करता है। और दाऊद का पुत्र, एक जागीरदार राजा था; वह महानतम राजा, स्वर्ग के पिता परमेश्वर का सेवक था।
>
> डॉ. रिचर्ड प्राट, जूनियर

यीशु को राजा की भूमिका में उल्लेख करने वाले अनुच्छेदों में उसे याजक के रूप में भी बताया गया है जो अपने लोगों के लिए मध्यस्थता करता है। यह उस प्राचीन जगत की रीति के अनुसार है जिसमें राजा याजकों का कार्य भी करते थे। उदाहरण के लिए उत्पत्ति 14 में मल्कीसेदेक याजक और राजा दोनों था।

जब पवित्र-वचन पिता के दाहिनी ओर यीशु के स्थान के बारे में बात करता है, तो यह कभी-कभी हमारे मसीहारूपी राजा के रूप में उसकी भूमिका पर भी बल देता है, जैसे कि प्रेरितों के काम 2:30-36; इफ़िसियों 1:18-23; इब्रानियों 1:3-9 और 1पतरस 3:21-22। अन्य स्थानों पर बाइबल हमारे लिए मध्यस्थता करने वाले महायाजक के रूप में यीशु की भूमिका को भी दर्शाती है। हम इस महत्व को रोमियों 8:34 और इब्रानियों 8:1।

इन दोनों स्थानों में अर्थ एक समान ही है: यीशु को सारी सृष्टि के ऊपर अधिकार और सामर्थ प्राप्त है, जिस पर वह पिता के स्थान पर राज्य करता है। और ऐसे एक स्थान में वह अपने लोगों को उद्धार प्रदान करता है और इस बात को निश्चित करता है कि पिता उन पर अनुग्रहपूर्ण दृष्टि रखे।

यीशु के मृतकों में से पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और पिता के दाहिनी ओर सक्हासन पर विराजमान होने के पश्चात्, प्रेरितों का विश्वास-कथन अंतिम दिन में मसीह द्वारा किए जाने वाले न्याय का उल्लेख करता है।

न्याय

जब विश्वास-कथन कहता है कि यीशु न्याय करने को लौटेगा, तो यह कहता है कि वह वहां से, अर्थात् पिता के दाहिने हाथ के अपने सक्हासन से आएगा। यहां विचार यह है कि यीशु संपूर्ण सृष्टि पर मानवीय राजा है और उन लोगों के विरुद्ध राजकीय दण्ड सुनाएगा जिन्होंने उसके नियमों का उल्लंघन किया और उसके राज्य एवं राजत्व का सम्मान नहीं किया। हम इसे पवित्र-वचन में लूका 22:30; प्रेरितों के काम 17:31; 2थिस्सलुनिकियों 1:5 और 4:1 आदि स्थानों में पा सकते हैं।

अंतिम न्याय में जीवित और मृतक और दोनों शामिल होंगे, अर्थात् वे सभी जो कभी संसार में रहे थे, वे सब लोग भी जो यीशु के आगमन तक जीवित रहेंगे। हर व्यक्ति के हर शब्द, विचार और कार्य का परमेश्वर के चरित्र के आधार पर न्याय किया जाएगा। और भयानक सत्य है कि प्रत्येक मनुष्य पाप का दोषी पाया जाएगा और मृत्यु का हकदार होगा।

शुभ संदेश यह है कि जो विश्वास के साथ यीशु के साथ जुड़े हैं वे मसीह की मृत्यु के द्वारा पहले से ही न्याय से होकर जा चुके हैं, और मसीह के पुनरुत्थान के द्वारा धर्मी ठहराए जाते हैं। इसलिए, न्याय के समय वे एक अनन्त आशीष और उत्तराधिकार को प्राप्त करेंगे।

परन्तु बुरी खबर यह है कि जो मसीह में नहीं पाए जाते उन्हें अपने जीवनों में परमेश्वर के क्रोध की अग्नि को सहना पड़ेगा। वे अनन्तता के लिए नरक में धकेल दिए जाएँगे।

> हमारे दिन-प्रतिदिन में अंतिम न्याय की धर्मशिक्षा कोई अधिक प्रचलित नहीं है। और मैं समझता हूँ कि बातें अभी बदली नहीं है, क्योंकि मैं नहीं समझता कि अंतिम न्याय मानव-जाति के लिए कभी आकर्षक रहा है। मेरा तर्क यह है कि अंतिम न्याय की घोषणा करना बहुत ही महत्वपूर्ण है- कि हमें यह घोषणा करना जरूरी है कि उन लोगों को अनन्त नरक में डाला जाएगा जो मसीह में विश्वास नहीं करते।
>
> डॉ. टॉम शरेइनर

> नरक के बारे में बात करने का एक कारण यह है कि यह सत्य है। और हम इस सत्य को नज़रंदाज़ करने का साहस नहीं कर सकते। और बहुत सा आधा-सत्य और यहां तक कि नब्बे प्रतिशत सत्य भी पाया जाता है, परन्तु यदि आपको अच्छी तरह से सुसमाचार प्रचार करना है और यदि आपको सत्य के साथ सुसमाचार प्रचार करना है तो आपको अंतिम न्याय के बारे में बात करना ज़रूरी है। इसलिए हम नरक के बारे में बात करते हैं और इसकी ज़रूरत भी है। नरक के विषय में जो हम देखते हैं वह यह है कि यह हमें स्मरण करवाता है कि न्यायी कौन है। हम नहीं हैं; वह है। यह हमें व्यक्तिगत उत्तरदायित्व का स्मरण करवाता है। यह हमें अत्यावश्यकता के बारे में स्मरण करवाता है। यह हमें अनन्तता के विषय में स्मरण करवाता है। बहुत सी बातें जिनके द्वारा नरक हम तक पहुंच सकता है, अतः नरक की बात किए बिना सुसमाचार का प्रचार करना बहुत ही मुश्किल कार्य होगा। इसलिए हम इसके बारे में बात करते हैं। परन्तु याद रखें, हम इसके बारे में सबसे अधिक बात करते हैं क्योंकि यह सत्य है और हम सत्य को नज़रंदाज़ नहीं कर सकते।
>
> डॉ. मैट फ्रीडमैन

निष्कर्ष

इस अध्याय में हमने प्रेरितों के विश्वास-कथन के विश्वास के उन सूत्रों की जांच की है जो यीशु मसीह के बारे में बात करते हैं। हमने उसके ईश्वरीय स्वभाव और त्रिएकता के अन्य सदस्यों के साथ उसके संबंध सहित उसके पूर्ण ईश्वरत्व के बारे में चर्चा की है। हमने उसके ईश्वरीय और मानवीय स्वभावों के बीच संबंध सहित उसके पूर्ण मनुष्यत्व पर भी चर्चा की है। और हमने उसके दीन होने से लेकर उसके ऊँचे उठाए जाने तक उसके कार्य का सारांश प्रदान किया है।

हम जो स्वयं को मसीही कहते हैं, और जो मसीहियत को समझना चाहते हैं, उनके लिए मसीह के व्यक्तित्व और कार्य की गहरी जानकारी होना महत्वपूर्ण है। यीशु हमारे धर्म का केन्द्रीय भाग है - वह

व्यक्ति जो हमें विश्वास की सभी अन्य प्रणालियों से अलग करता है। वह ब्रह्मांड का शासक है, और वह धूरी है जिस पर सारा इतिहास घूमता है। वह हमारा परमेश्वर, हमारा महायाजक, और हमारा राजा है। और उद्धार उसे जानना, उससे प्रेम करना, और उसके साथ जुड़ने में जीवन को पाने से कम नहीं है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।